सरपंच

लेखक

दीनू भाई पन्त

प्रकाशक

ललितकला, संस्कृति ते साहित्य अकादमी
जम्मू ते कश्मीर, जम्मू ।

सरपंच

लेखक

दीनू भाई पन्त

प्रकाशक

ललितकला, संस्कृति ते साहित्य अकादमी

जम्मू व कश्मीर, जम्मू ।

प्रकाशक :

मंत्री, कल्चरल अकादमी, जम्मू

मुल्य : ४ रुपए ५५ पसे

मुद्रक :

दी लीटलमैन प्रिंटर्ज,
मौंथली बाजार, जम्मू ।

समर्पण

उन पंचों सरपंचों को जो डुग्गर के आदर्श सरपंच "रणपत" के चरण चिह्नों पर चल कर देश में न्याय की स्थापना और उन्नति के कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

—दीनू भाई पन्त

रुपान्तर

अपने डोगरी नाटक सरपंच का राष्ट्र भाषा हिन्दी में रुपांतर करते समय मेरे सामने उन ओड़ों ग्रामबासियों का भाषा सम्बन्धी ज्ञानस्तर उपस्तिथ है जिन तक कि मुझे अपना स्वर पहुँचाना है । अत: हिन्दी के उच्चस्तरीय पाठकों और पारखियों से मुझे क्षमा याचना करनी है । आशा है वे बड़े लोग, सदूरवर्ती काशमीर राज्य के एक पहाड़ी कोने में बैठे इस प्रादेशिक भाषा डोगरी के लेखक की इस तुछ्य भेंट अस्वीकार नहीं करेंगे ।

अपने प्रदेश में पचासों बार खेले जाने और लाखों दर्शकों की प्रशंसा प्राप्त करवे के बावजूद, अनुवादक तो अनुवादक ही है । नाटक का बिषय आज के समूचे भारत का ज्वलन्त विषय है और हमें पचायती अनुशासन तथा न्याय का पुनर्स्थपित करना

है, करने के लिये अवश्य ही अपने विगत पंचायती इतिहास के उज्वल चरित्रों को उभारना होगा। ग्रामों की नटक मंडलियां अपने अपने प्रदेश की विशेष परस्थियों के अनुसार इसे खेल सकती हैं।

जम्मू काश्मीर राज्य की कल्चरल अकादमी इस अनुवाद को प्रकाशित करके हमारी अकांक्षाओं को राष्ट्रीय क्षेत्र तक पहुँचाने का प्रशंसीय कार्य कर रही है।

दीनू भाई पन्त
२११ दरबार गढ, जम्मू।

१० मार्च ७३

ooo

भूमिका

©

डोगरी साहित्य के पाठको को श्री 'दीनू भाई पन्त' के परिचय की आवश्यकता नहीं, वह दो युगों के मिलन बिन्दु है। एक युग वह जब कि वह पंडित हरदत्त जी के डोगरी काव्य क्षेत्र में एक मात्र साथी थे और उन्होंने "गुत्तलू" "मंगू दी छवील" और गुलाब आदि पुस्तकें लिखीं। दूसरा वह जब नये परि-वर्तन के साथ डुग्गर की सांस्कृतिक नव चेतना ने जन्म लिया। उन की कविता में प्राचीन युग की शक्ति और उमंग तथा नये युग के परि-वर्तित सजग दृष्टिकोण का सजीव

सम्मिश्रण है । आधुनिक काल में लोक जीवन का जटिल समस्याओं को सुलझाने के लिये स्पष्ट तथा रचनात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है । अतः गद्य साहित्य के निर्माण पर अधिक बल दिया जाना वाच्छनीय ही है । श्री पन्त ने जिस प्रकार इस दोहरे लक्ष्य को पूरा किया है, वह अत्याधिक श्रेयस्पद है । काव्यमय अनुभूतियों से परिपूर्ण और व्यंग्य मय कथोपकथन युक्त नाटक, गद्य साहित्य के सुन्दर नमूने उपस्थित करते हैं । डोगरी साहित्य के इस महत्वपूर्ण अंग की पूर्ति की ओर सर्व प्रथम जिन महानुभावों का ध्यान गया उन में श्री पन्त एक हैं । प्रसिद्ध डोगरी नाटक "नमां ग्रां" के लिखने में वे श्री रामनाथ शास्त्री और राम कुमार अबरोल के सहयोगी थे, जो कि एक आदर्श गांव का चित्र उपस्थित करता है ।

प्रस्तुत नाटक 'सरपंच' श्री पन्त की

बहुमुखी प्रतिभा का उत्कृष्ट नमूना है। आज भारत के जन-गण जिस ग्राम-पंचायत को प्रजातंत्र का मूल-भूत इकाई मान कर पंचायती राज्य की स्थापना के लिये यत्नशील हैं। वह पंचायत व्यवस्था हमारे समाज के लिये कोई नयी चीज नहीं अपितु इस पवित्र भूमि की परम्परागत वह निधि है जिसे हमारे देश के नीर-क्षीर विवेकी पंचों ने अपने हृदय रक्त से सींच कर स्वयं प्रतिष्ठित सर्व-मान्य व्यवस्था बना दिया है। आज जबकि नवीन नीतिज्ञों तथा अर्थशास्त्र वेत्ताओं के चिन्तन का प्रमुख विषय विकेन्द्रीकरण बना हुआ है, पंचायत का महत्व और भी अधिक स्पष्ट हो गया है। आज की पंचायत व्यवस्था का महत्व केवल शासन में योग देना ही नहीं, अपितु सहज सुलभ न्याय वितरण तथ उन्नति और कल्याण का पथ प्रदर्शन करना भी है।

नाटक "सरपंच" हमारे सामने

डुग्गर के एक ऐसे ऐतिहासिक आदर्श सरपंच "दाता रणपत" की जीती जागती तस्वीर प्रस्तुत करता है जिस ने आज से सदियों पहिले अपने जीवन का उत्सर्ग करके पंचायती न्याय की स्थापना की थी। यह नाटक उस नवविकसित जागीरदार अर्थात् "बांगी" की भी कथा है जिस ने स्वार्थान्ध हो कर अपने ही भाई बन्धुओं की सम्पदा को जबर्दस्ती छीन लिया था और अन्त में सरपंचों के सिरमोर दाता रणपत की मृत्यु का कारण बना। श्री पन्त का लक्ष्य एक करुण घटना का चित्रण ही ही नहीं है अपितु वह एक समाज शास्त्र वेत्ता की तरह प्रतिपादन करता है। वह पुराने राज दरबारों के वैभव चित्रात्मकता को ही ग्रहण नहीं करता बल्कि उन विषमताओं को और ध्यान देता है

जो सामाजिक प्रणाली के मूल में निहित हैं तथा स्थान स्थान पर उभर पड़ती हैं। इस लिये वह नाटक एक ऐतिहासिक काल विशेष का ही चित्रण न हो कर--सर्व-कालीन और सर्वदेशीय अमर रचना बन पड़ा है।

कहानी तथा उपन्यास की अपेक्षा नाटक में प्रतीकात्मकता ही अधिक होती है। सरपंच का नाटक दाता रणपत केवल एक ब्राह्मण पुरोहित या सरपंच मात्र ही नहीं, जिस ने कि न्याय के लिये आत्म बलिदान दिया, अपितु उन समस्त न्याय समर्थकों का प्रतिनिधि है, जो सदा से अत्याचार और अन्याय का विरोध करते आये हैं, चाहे उन्हें इस की कितनी ही कीमत चुकानी पड़े। दूसरी ओर "बांगी" केवल

तत्कालीन स्वार्थांध अत्याचारी शासक मात्र ही नहीं, जो अपने चापलूस अनुचरों की मंत्रणा पर स्वार्थों के पूर्ति केलिए सब कुछ कर गुजरता है, अपितु आज के अनेक स्वार्थी शासकों का प्रतीक भी है जो अपने चाटुकार चापलूस समर्थकों से घिरे हुए हत्यारे षड़यंत्रों में संलग्न हैं। "चोधरी" उन कमजोर किन्तु वीर व्यक्तियों का प्रति रूप है जो हार कर भी झुकते नहीं। चोहलो केवल बांगी का श्रमनिष्ठ भाई ही, नहीं अपितु सर्वकालीन प्रगतिवाद का प्रतीक और परिवर्तन का अग्रदूत है। रणपत की वृद्धा माता स्नेह और ममता की सजीव प्रतिमा होते हुए भी सत्य और न्याय के लिये अपने पुत्र तक का बलिदान कर सकने वाली आदर्श नारी है। मोहतवर कोई व्यक्तित्व प्रधान

चरित्र न होते हुए भी उस सारे मुन्शी वर्ग का रूप है जो अपने मालिकों की जी हजूरी में अपने स्वार्थों की पूर्ति करते रहना ही जीवन का चरम लक्ष्य समझते हैं। फिड्डू उन कायर मगर चालाक और चापलूस लोगों का मूत नमूना है जो अपने स्वामी की रुचि के अनुसार कर्णप्रिय बातें कह कर ही उनको फुसलाते और ठगते रहते हैं।

सरपंच एक प्रभावशाली नाटक है जो अच्छाई और बुराई के संघर्ष का सबल चित्रण करता है। न्याय तथा सच्चाई की शक्तियें सामयिक रूप से दब भले ही जाएं किन्तु विनष्ट नहीं हो सकतीं, इसके विपरीत अन्याय और अत्याचार को क्षणिक सफलता का प्रभाव स्वयं

अपने लिये ही आत्म घातक होता है। उस की विजय ही उसके विनाश का क:रण बन जाती है। सरपंच की मृत्यु में ही उस की प्रतिष्ठा और मानता विराजमान है.।

सरपंच का विषय गम्भीर और समयानुकूल है। उसके कथोपकथन सजीव तथा भाषा सशक्त है। मगर नाटक की असल कसौटी विषय वस्तु और कथोपकथन से भी परे उस की रूपात्मकता में निहित रहती है। सरपंच इस कसौटी पर खरा उतरता है। न केवल पढ़ने में अपितु रंगमञ्च पर भा यह नाटक पूर्णतया सफल और प्रभाव शाली सिद्ध हुआ है। डोगरी के अब तक देखे और खेले गये नाटकों में इस का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। रणपत का बलिदान आज के पंचों

और सरपंचों के लिये अनुकरणीय है । लेखक श्री पन्त की लेखनी आज भी विकासोन्मुख है । डोगरी साहित्य को उन से और भी अधिकाधिक आशाएं रखने का अधिकार है ।

प्रो० नीलाम्बर श

(O.)

सरपंच

प्रार्थना

[रंग मंच पर भगवां वस्त्र धारण किये हाथ में इकतारा थामें करुण स्वर में डुग्गर महिमा की कारकें गाते हुए प्रवेश करता है।]

भारत के उत्तरीय खण्ड की धरती धर्माचारी,
वेद पुराणों ने गायी है जिस की महिमा न्यारी।
देव भूमि ऋषि भूमि कहाती डुग्गर धरा सुहानी,
हरे भरे वन कानन शोभित ठंडे मीठे पानी।
भोले भाले लोग डोगरे श्रमरत पावन सच्चे
दुष्ट जनो के वैरी जानो अच्छो के संग अच्छे।
लक्ष्मी औ सुकराल देवियां स्वग त्याग कर आयें,
वैष्णों सी बेटियां यहां की आलम जैसी मायें।
वीर वांकुरे बच्चे इस के दृढ प्रतिज्ञ अभिमानी,
कालवीर, मंडलीक, मालदेव जित्तो, रणपत ज्ञानी।
स्थान स्थान पर सिद्ध योगियो ने लीं योग समाधें
गांव गांव में सतियों और शहीदों की हैं यादें
जिस के हर पत्थर पर अंकित वलिदानों की गाथा,
उस धरती की धूल से पावन कर लो अपना माथा।
वीर पुरी का वासी रणपत था स्वर्गिक अवतारी
धर्म न्याय की खातिर जिस ने जीवन ममता वारी।
वे वलिदान भुलावे कैसे यह वीरो की धरती,
जिस की स्नेह मयी गोदी में यह घटना थी बरती।
चांद सुनाता तारों से जब जब यह करुण कहानी,
रात बेचारी आहें भरती नैनां छम छम पानी।

पात्र परिचय

रणपत : जवान सरपञ्च

बांगी : जालम जमींदार

चौहलो : बांगी का भाई

चौधरी : बांगी का भागीदार

मोहतवर : बांगी का सलाहकार

फिड्डू : बांगी का चापलूस नाई

मां : रणपत की माता

शुक्रा : रणपत की पत्नी

चंदू : युवक किसान

बूढ़ा : किसान

चुन्नु : चौधरी का पोता

फीना-भीमा : बांगी के प्यादे

चौकी दार : गांव का चौकीदार।

पहला दृश्य

[प्रात:काल के झुटपटे में सिपाही वेशधारी दो आदमी छिपे छिपे से किसी के आने की वाट देख रहे है। थोड़ी देर में आने वाले की आहट पा कर सर्तकता पूर्वक लाठियां संभाले खड़े रहते हैं। कुछ देर के बाद कंधे पर हल उठाये अधेड़ आयु का कमजोर सा फटे हाल एक किसान चंदू प्रवेश कर के धीरे - धीरे आगे बढ़ने लगता है। दोनों सिपाही शीघ्रता से आगे बढ़कर लाठियों से उसका रास्ता रोक देते हैं। डरा सहमा सा चंदू चुप चाप कभी एक की तरफ तो कभी दूसरे की ओर ताकता भर रहता है।

पहला सिपाही : (धमकी से) आबे, तुझे कल कहला भेजा था कि राजा साहब बुला रहे हैं। तू आया क्यों नहीं ?

चंदू : (चुप्प रहता है।)

दूसरा सिपाही : पहले बता तेरा नाम क्या है ?

पहला सिपाही : पहले बोल तू आया क्यों नहीं ?

चंदू : (गिड़गिड़ाते हुए) भाई लोगो ! आप यह तो जानते

ही हैं कि ये खेतों में बीज बोने के दिन बीत रहे हैं। अगर अब भी चार मुठ्ठी अनाज न बोया तो बाल बच्चों का पेट कैसे भरूंगा ?

दूसरा सिपाही : अच्छा ! तो तेरा दो मुठ्ठी अनाज बोना सरकारी काम से भी जरूरी है।

चंदू : सरकारी हुकम सिरमाथे गरीबपरवर ! मगर पेट भरने को अनाज तो इन्हीं खेतों से मिलता है।

पहला सिपाही : (कड़क कर) अबे सवाल गंदम और जवाब चना ? राजा साहब के हुकम को मजाक समझ लिया ?

चंदू : जान है तो जहान, माईबाप ! सरकारी काम जिन्दगी के साथ। जिन्दगी चलती है अनाज खा कर और अनाज मिलता है खेत बो कर। यह वत्तर का समय निकल गया तो ना जान ना जहान। मैं अभी पिछले महीने राजा साहब का परवाना लेकर गजनसू गया था। चार पांच दिन लग गये। अकेला आदमी हूँ, फसल का समय निकल गया तो बरबाद हो जाऊंगा। इस बार किसी दूसरे पर डालिये यह बेगार।

दोनों सिपाही : अच्छा तो तू इसे बेगार कहता है ?

चंदू : बेगार नहीं तो क्या कहूँ सरकार ! मगर मैं कब बेगार देने से भी इनकार करता हूँ। लेकिन आप लोगों को भी तो किसी की मजबूरी पर तरस करना चाहिये। गरीब आदमी हूँ मुझ पर ही इतना जुलम क्यों ?

पहला सिपाही : (गुस्से में थप्पड़ जड़ कर) अच्छा बहुत चपड़-चपड़ करने लगा।

दूसरा सिपाही : ओ हो ! थप्पड़ ही जड़ने हैं तो जरा गर्मी उतारने वाले जड़। यह क्या प्यार जताने लगा (आगे बढ़ कर डंडे से पीटता है) यह ले ससुर पहले काम का मजूरी।

पहला सिपाही : ले बांध इस बदमाश को। ले चलें सरकार के सामने। बाकी मजूरी वही खुद देंगे इसको। चार छः महीने खाट पर पड़ा हड्डियां नां सेंकता रहा तो क्या याद करेगा बेचारा ?

चंदू : (दोनों के पांव छू कर) माई बाप मेरे छोटे-छोटे बच्चों पर दया कीजिये। आप लोग भी तो बाल-बच्चों वाले हैं।

दूसरा सिपाही : (धक्का मार कर जमीन पर गिराते हुए) सीधी तरह चलेगा या यहीं खाल खिंचवाना चाहता है।

चंदू : (जमीन पर पड़े पड़े गिड़गिड़ाते हुए) दण्ड जुर्माना जो भी कर लो सरकार ! पर इस फसल के समय यह जुल्म मत ढाओ। बीज बोने का समय हाथ से निकल गया तो छोटा छोटा परिवार दाने दाने के लिये तड़पता मर जाएगा। पहले भी मेरे घर वाली किस तरह बिना दवा दारू के चल बसी, यह तो आप भी जानते हैं। (रोते हुए) मैं पांच रुपए दे दूंगा मगर इस समय मुझे छोड़ दीजिये।

पहला सिपाही : अबे सिरफ पांच ?

दूसरा सिपाही : देखता नहीं हम दो हैं।

पहला सिपाही : दस तो निकाल !

चंदू : दस ? तब यह हल और बैल ही बेच लीजिये औ मुझे तथा मेरे बच्चों को अपने हाथों मार डालिये ।

दोनों सिपाही : अच्छा निकाल पांच ही ।

चंदू : यहां मेरे पास रुपए कहां ? घर चल कर किसी से उधार—— ——

[इसी समय सफेद पाज़ामा, रेशमी कुर्ता, पगड़ी पर कलगी और कमर में तलवार लटकाए बड़ी-बड़ी मूछों और क्रूर चेहरे वाले 'बांगी' का प्रवेश]

बांगी : (प्रवेश करते ही कड़कती आवाज़ में) हेड़ी ! फीने ! क्या बात है ? बदमाशों तुम लोग......

दोनों सिपाही : (डर कर हाथ जोड़ते हुए) सरकार इस चंदू जाट को आपका हुकम सुनाया, मगर यह...—

बांगी : (क्रोध में) मगर क्या ?

पहला सिपाही : सरकार यह कहता है कि अभी बांगी चौधरी राजा नहीं बना, और यह जुल्म ढाने लगा। रोज उसकी बेगारें ! हम कोई उस की परजा तो नहीं हैं।

बांगी : (कड़क कर) मार लाठी ! इस कमीने कुत्ते की यह यह मजाल ! (धक्का मार कर चंदू को गिरा देता है)

बांधो इस बदमाश को और डाल दो उस अन्धेरे कुंएं में।

चंदू : (रोते हुए) नहीं सरकार मैंने यह कुछ नहीं कहा। नहीं कहा !

बांगी : (अनसुनी करके चला जाता है।

दोनों सिपाही : (आगे बढ़ कर चंदू को पीटते हुए बांधने लगते हैं)
(चंदू चिल्लाता औरदुहाई मचाता है)

(इसी समय मोटे गाढे के तहमद कुर्ता पहने सिर पर मुंडासा बांधे हाथ में लाठी लिये चौधरी का प्रवेश। चौधरी को आया देख दोनों सिपाही कुछ ठिठक जाते हैं। चंदू जमीन पर पड़ा तड़पता रहता है)

धरी : (कुछ क्षण इस दृष्य को और बांगी के जाने की दिशा में निहारते हुए सबल तथा कारुणिक आवाज़ में)

ओ पापी बांगी! अनेक छलकपटों द्वारा मेरे भाइयों औ बेटों का जवान खून पी कर भी तेरी प्यास नहीं बुझी! अब इन गरीब लोगों की हड्डियां तक चबाने पर उतर आये हो। धिक्कार है तेरे जीने पर ! तूं रावण और कस बन कर जितना जुल्म कर सकता है कर ले। एक दिन तेरे यह पाप ही तुझे ले डूबेंगे। डोगरों की यह धरती युगों युगों तक तुम्हारे नाम पर थूकेगी।

(सिपाहियों से) खबरदार ओ कुत्तो! अब इस पर हाथ उठाया तो.....

(दोनों सिपाही भाग खड़े होते हैं। चौधरी, चंदू को सहारा दे कर उठाता है ओर धीरे धीरे बड़बड़ाते हुए अपने साथ ले जाता है)

OOO

दूसरा दृश्य

[पुरोहित रणपत के घर का ठाकुर द्वारा (पूजा पच्चीस वर्षीय स्वास्थ्य सुन्दर और सौम्य "रणपत" सादा और स्वच्छ वस्त्र पहिने पूजा में हैं। उनके सामने फूल मालाओं से सज्जित ठाकु का सिंहासन सुशोभित है। धूप दीप जल रहे आस पास पूजा के बर्तन पड़े हैं। रणपत मंत्र पाठ हुए ध्यान मग्न हैं। इसी समय उन की नवोढ़ा 'शुक्रा' सुन्दर वस्त्राभूषण धारण किये हाथ नैवेद्य की थाली उठाये प्रवेश करके धीरे - हुए पूजा करते पति के पास पहुँच है परन्तु रणपत को उसके आने का पता तक चलता। शुक्रा थोड़ी देर खड़ी रह कर पति तन्मयता पर मुस्कराती हुई नैवेद्य की थाली की चौकी पर रखने लगती है। जिसकी आवा रणपत का ध्यान टूट जाता है और वह शुक्रा के को एक टक निहारते रहते हैं।

रणपत : (कुछ देर देखते रह कर) अहा ! इस निर्धन ब्रा के घर में भी स्वर्ग की अपसरा !

शुक्रा : (चतुरता पूर्वक मुस्करा कर) नहीं, अपने देवता की पुजारिन । महात्मा बुद्ध के समान दयालू और तेजवंत आपके चरणों की दासी ।

रणपत : (प्रेम भरी वाणी में) अच्छा ! अपनी सुन्दरता द्वारा चतुर्दशी के चंद्रमा को लजाने वाली यह भोली भाली सूरत बातें बनाने में चतुर है ?

शुक्रा : क्यों न हो? विद्या और ज्ञान के भण्डार वीरपुरी पंडितों की वहु जो ठहरी । परन्तु आप पहिले यह नैवेद्य दर्शा कर अपनी पूजा तो पूर्ण कर लीजिये मुनि महाराज !

रणपत : (पर्दे में किसी के सिसकने और रोने की आवाज सुनते हुए) यह द्वार पर किस का बच्चा रो रहा है ? सामने आ कर फिर पिछे क्यों हट गया ?

शुक्रा : होगा कोई भिखमंगा ! इन लोगों को भी लाज शरम कहां । आप नैवेद्य चखकर अपना व्रत समाप्त कीजिये । आपने कल से फलाहार तक नहीं लिया ।

रणपत : (भावुक स्वर में) लाज शरम तो उस देश और समाज को चाहिये जिसके बच्चे भीख मांगते फिरें । भीख कब कोई खुशी से मांगता है ? पर तुम देखो तो सही, कि यह है कौन !

(शुक्रा दरवाजे के बाहिर जा कर एक रोते हुए बच्चे की बांह थामे दोवारा प्रवेश करती है । बच्चे की आयु छे सात साल के लगभग हैं और उसके कपड़े फटे हैं)

शुक्रा : (दोवारा प्रवेश कर के) लो यह तो आम वाले चौधरियों

का चुन्नु है। बड़ा ही शरमीला बच्चा है। (चुन्नु से) बस, बस, अच्छे बच्चे रोते नहीं चुन्नु !

(बच्चा और भी सुबकने लगता है)

रणपत : (अधीरता पूर्वक बच्चे को गले से लगाते हुए) क्या बात है चुन्नु किस ने पीटा है तुम्हें ?

शुक्रा : (क्रोध जताते हुए) वाह, देख ली आप की पंडिताई ! पूजा करते करते उस मैले गन्दे बच्चे को छाती से चिपटा लिया ! यही है आप की पवित्रता ? अगर मां जी देख लें तब ?

रणपत : देखा करें। यह मैले कुचैले बच्चे ही संसार की सब से बड़ी दौलत हैं। यही तो कल वीर, विद्वान, कला-कुशल बन कर इस देश के कार्य संवारेंगे। (बच्चे से) बता बेटे किस ने पीटा है तुम्हें।

चुन्नु : हूँ..... ऊं......अम्मा रोटी नहीं देती......रात भी नहीं दी थी......हूँ ...... ऊं, ऊं......

रणपत : अच्छा भूख लगी है बच्चू को ! (नैवेद्य की थाली उठा कर बच्चे के सामने करते हुए) ले ! खा ले बेटा।

शुक्रा : यह आप खाइये मैं इसके लिये और लाए देती हूँ।

रणपत : तुम मेरे लिये ही और ला दो। यह तो स्वयं बाल-गोपाल कृष्ण नैवेद्य लेने आ गये हैं।

(रणपत अपने हाथ से कौर उठा कर बच्चे के मुंह में डालते हैं। चुन्नु खाते हुए मुस्कराने लगता है।)

रणपत : (शुभ्रा से) देखा भगवान का भोला भाला रूप अभी रो रहा था तो अभी फूल के समान खिल उठा। बचपना भी बहुत प्यारी अवस्था है।

(इसी समय बाहिर से पुकारने की आवाज़ आती है)

चुन्नु ! ......ओ चुन्नु ! कहां मर गया यह लड़का !

रणपत : (आवाज़ पहचान कर) शायद चौधरी जी चुन्नु को ढूंढ रहे हैं। (ऊंचे स्वर में) आइये चौधरी जी......अन्दर आ जाइये यहीं है आप का चुन्नु।

(बच्चा सहमा सा खाना बन्द कर देता है। शुभ्रा शीघ्रता से पर्दे की ओट में चली जाती है और चौधरी प्रवेश करता है)

चौधरी : (प्रवेश करते ही) बच्चे की ओर देख कर) अच्छा, यह मर्दूद यहां छिपा बैठा है और मैं कुत्ते की तरह गलियों में भटकता फिर रहा हूँ।

(बच्चे को कुछ चबाते देख कर क्रोध में) क्यों वे कुत्तरे किस ने कहा तुम्हें यहां खाना खाने के लिये ?

(चुन्नु को पीटने के लिए चौधरी का आगे बढ़ना, डरे बच्चे का रणपत के पीछे दुबकना)

रणपत : (चौधरी को रोकते हुए) चौधरी जी क्या हो गया है आप को? इस मासूम बच्चे पर इतना क्रोध ? कुछ इन ठाकुर भगवान का भय मानिये।

चौधरी : (अत्यंत दुख भरी आवाज) भगवान ? कौन भगवान ? किस का भगवान ? अगर भगवान होता तो मेरी

यह दुर्दशा क्यों होती ? क्यों मेरा छोटा छोटा परिवा भूखों बिलखता फिरता ! (आंसू पोंछता है)

रणपत : आप सियाने समझदार आदमी हैं चौधरी जी । धीरज धारण कीजिये, हौसला रखिये ।

चौधरी : धीरज, हौसला ! सब कहने की बातें हैं पुरोहित जी। पेट में आग सुलग रही हो तो धीरज हौंसला कुछ नहीं सूझते । आप छोड़िये इस कीड़े को । इस की भूख सदा के लिये मिटा डालूं ।

(चौधरी का क्रोध में बच्चे की तरफ बढ़ना, बच्चे का दुबक जाना और रणपत का चौधरी को थाम लेना)

रणपत . (चौधरी को थामे करुण आवाज में) मैं आप के आगे हाथ जोड़ता हूँ चौधरी जी । अब इस मासूम बच्चे को कुछ मत कहिये । आप मुझे क्षमा कर दीजिये। मैंने ही उसे नैवेद्य खाने के लिये कहा था । दोष मेरा ही है ।

चौधरी : (घबरा कर) नहीं ! नहीं ! पुरोहित जी । इस तरह हाथ जोड़ कर आप मुझ पापी को और भी पापों में मत डुबोईये । मेरी सुधबुध ठिकाने नहीं । पता नहीं क्या-क्या मुंह से निकल गया (पैरों पर गिर कर) मुझे माफ कर दीजिये ।

रणपत : (चौधरी को उठाते हुए) भगवती त्रीकूटा आप का कल्याण करें । उठिये विपत्ति के समय हिम्मत से काम लेना ही क्षत्री का धर्म है। वीर क्षत्री क्या ऐसे हिम्मत हारते हैं ?

चौधरी : आप सच कहते हैं। हिम्मत करना बड़ी बात है। मैं ही कमजोर हूँ। (कुछ रुक कर) पर हिम्मत भी कैसी करूं ? जालम बैरी ने मेरे तीन भाई और दो जवान बेटे मरवा डाले। तीन चार विधवाएं और आठ दस्स छोटे छोटे बच्चे खाने को तरस रहे हैं। मजदूरी मिलती नहीं इन अबलाओं को छोड़ कर कहीं दूर पार जा नहीं सकता। अदालत कचहरियों में मुझे धक्के मिलते हैं। ईश्वर कानों में रूई डाले सो रहा है। हिम्मत करूं तो करूं भी किस सहारे पर। (आंसू पुंछते हुए) अब तो यह जी चाहता हैं कि अपने हाथों इस परिवार को खतम करके खुद उस पापी भाई के दरवाज़े पर प्राण दे डालूं।

रणपत : (कुछ चुप रह कर) चौधरीजी अगर आप बुरा ना मानें तो एक विनती करूं।

चौधरी : राम राम ! इस तरह की बातें कह कर आप मुझे डूबे को और क्यों डुबाते हैं। आप जान मांगें तो वह भी हाज़िर है।

रणपत : चौधरी जी। इस घर की हर वस्तु आप ही के खून पसीने की कमाई से बनी है। आप को जिस वस्तु की आवश्यकता हो यहां से ले जाइये। इस घर को अपना ही घर जानिये। यह चुन्नु अपना घर जान कर ही तो यहां आया है। अब इसे कुछ मत कहिये।

चौधरी : (दुखी हो कर) कैसी बातें कहते हैं पुरोहित जी। मैं चाड़क राजपूत हो कर अपने कुल पुरोहितों के घर से चीज़ें लूं। अभी मेरे शरीर में मरने की ताकत है। आप मेरी भूल चूक माफ कर दें। (चुन्नु से) चल बेटा

पुरोहित जी के चरण और चल घर।

[चुन्नु और चौधरी बारी बारी पुरोहित के चरण छू कर चले जाते हैं]

शुक्रा : (प्रवेश करते हुए) कैसा क्रूर राक्षस है यह बूढ़ा चौधरी। उस मासूम बच्चे पर चीते की तरह टूट पड़ा।

रणपत : (गम्भीर वाणी में) चारों ओर से विपत्तियों से घिरा आदमी क्रूर राक्षस तो बन ही जाता है। परन्तु अपने कलेजे के टुकड़ों को नोचने वालों का दुख कौन जाने।

शुक्रा : विपत्तिया तो आती ही हैं। उन से निपटने के लिये आदमी भगवान पर भरोसा कर सकता है।

रणपत : (दुखी आवाज़ में) इस तरह जुल्मों और अत्याचारों में दबे पिसे विवश भले लोगों को देख कभी-कभी मेरे मन में भी शंका होने लगता है कि परम दयालू परमात्मा नाम की कोई चीज है भी या नहीं।

शुक्रा : निर्दयी लोगों के लिये परमात्मा ?

रणपत : परन्तु दुखों और अत्याचारों के नीचे दबे उस के हृदय में स्थित आदमी को तुम ने नहीं पहिचाना ? आज भी उस के अंतस्तल में धर्म अधर्म की चेतना माजूद है। उस का धर्म लेना नहीं देना है। दुखों में भी अपनी कुलमर्य्यादा न भूलने वाले को तू निर्दय समझ रही है ?

[रणपत को पुकारते, उस की वृद्धा माता का

प्रवेश]

मां : रणू ! रणुवा......रणुवा......

[शुक्रा का जल्दी में घूंघट सम्भालना। रणपत का आगे बढ़ कर मां के चरण छूना। मां का ठाकुर जी को प्रणाम करना]

मां : (शुक्रा को आशिर्वाद देते हुए) तेरा सौभाग्य अटल रहे (रणपत से) कौन यहां इतने ऊंचे स्वर में बोल रहा था।

रणपत : यह आमरैया वाला चौधरी ! आज कल बड़ी दयनीय दशा है बेचारे की ! परन्तु है बड़ा स्वाभिमानी और हठीला। बच्चे को नैवेद्य खाते देखा तो इसी पर उबल पड़ा।

मां : यह स्वाभिमान और हठीलापन ही तो इन चाड़क चौधरियों का सब से बड़ा गुण है बेटा। टूट जाना मगर झुकना नहीं। मौत स्वीकार कर लेना परन्तु अपनी मर्य्यादा पर डटे रहना।

रणपत : यह अकड़ भी खूब अनोखी है।

मां : (भावावेस में) तुम्हे क्या पता बच्चो। मैं बहुत छोटी सी जब इस घर में आई थी, तब इन चौरियों का भाग्य वैभव देखने योग्य था। कोई अपरिचत अतिथि भी इस गांव से भूखा प्यासा नहीं जा सकता था। तब बड़े चौधरी जीवित थे बीसियों लोग काम करने वाले थे। बेटे बेटियो और वहुओं से परिवार हरा भरा था।

रणपत : तब ?

मां : पर पता नहीं कैसे इस धर्मी कुल में वह लोभी कुल-
घाती बांगी पैदा हो गया कि जिस के वार्थाछल कपटों
की बदौलत यह भरापूरा पिवार नष्ट हो गया ।

रणपत : इस चौधरी की बातें सुन कर शुक्रा कह रही थी कि
यह कोई राक्षस आदमी है ।

मां : (शुक्रा से) तुझे क्या पता बेटी ! इस जैसा धर्मी दयालु
और शील स्वभाव वाला दूसरा कोई सारे अलाके में
नहीं था । परन्तु अत्याचारों की मार और भूख की
आग कब किसी अकल ठिकाने रहने देते हैं ।

रणपत : मां, मैंने चौधरी से कहा कि आप को किसी वस्तु की
जरूरत हो तो यहां से ले जाया करें ।

मां : बेटा जिन हाथों ने भरे खजाने दान किये हों वे भला
किसी का दा ग्रहण करने को कब आगे बढ़ने लगे ?

रणपत : परन्तु उनका सारा परिवार फाके काट रहा है । हम
उनकी सहायता कैसे कर सकते हैं ?

मां : (भगवान के सामने हाथ बांध कर) उन की सहायता
तो यह ठाकुर महाराज ही करेंगे । मगर तुम्हें भी बात
करने का ढंग नहीं आया मैं खुद कह लूंगी (शुक्रा से)
चल बेटी कुछ खाने को तो दे ।

शुक्रा : (मा का हाथ थाम कर) चलिये मां जी भोजन त्यार है

[सब चले जाते हैं]

OO

तीसरा दृश्य

[समय प्रातः स्थान बांगी चाडक के घर का सुज्जित दीवान खाना। दीवारों पर भित्ति चित्रों के अलावा ढालें और तलवारें लटक रही है। एक तखत पोश पर मसनद बिछी है और तकिये के सहारे डोगरा पोशाक पहने बांगी चाड़क बैठा है। भीमा और फीना दो सेवक सेवा रत हैं। फीना पांव दाव रहा है तो भीमा हुक्का ठीक कर रहा है]

बांगी : (फीने को पांव से धकेलते हुए) मार लाठी! बदमाशो जी चाहता है कि इस तलवार से तुम सब के टुकड़े-टुकड़े कर डालूं। उस ससुरे नाई को हमारा गुस्सा मालूम नहीं ?

(एक हाथ में पतलों सी लाठी और कन्धे पर गुच्छी (नाइयों का थैला) लटकाये भय और चापलूसी का एक साथ नाटक करते हुए 'फिड्डू' नाई का प्रवेश)

फिड्डू : (दूर से ही आदाव सलाम बजाते हुए) दुहाई चौधरी जी, दुहाई। जान से मार डालिये पर गुस्सा मत कीजिये चौधरी जी।

बांगी : (और भी गुस्से में) चौधरी ? ससुरे हमें चौधरी कहता

है ? मार लाठी ...

फिड्डू : (डर से कांपते हुए) नहीं ! नहीं गलती हो गई सरकार माफ कर दें अब से सरकार ही कहा करूंगा। अन्नदाता सिर्फ इस बार माफ कर दीजिये सरकार।

बांगी : मार लाठ ! इतनी देर क्यों लगाई ?

फिड्डू : अन्दर वाली सरकार का हुकम था जनाब।

बांगी : अन्दर वाली सरकार ?

फिड्डू : यह मत पूछिये अन्नदादा। आप की तरह उस का भी मुझ पर बहुत रोबदाब है। घर से चलने लगा तो बोली, "पहिले लकड़ियां फाड़ दे तब जाना" बहुत जालम है माई-बाप !

बांगी : मार लाठी ! ओ जालम के बच्चे ! तू बात किस के बारे मे कह रहा है ?

फिड्डू : (शरमानें का नाटक करते हुए) वही मेरे घर वाली अन्नदाना। देखने में चाहे सूखी सींक सो ही है मगर बातें बनाने में पूरी जबान दराज़ बस कैंची की तरह काटती ही चली जाती है माई बाप।

बांगी : मार लाठी ! बदमाश कमीने ! तेरी औरत सरकार है ?

फिड्डू : सरकार......? आप तो अभी सरकार बन ही रहे हैं मगर वह तो पैदा होते ही सरकार थी। जब वह पैदा हुई तो उसकी मां सरकारी घर में नौकर हुई

थी, इस लिये मेरी सास ने उस का नाम ही सरकारी रख दिया......

बांगी : मार लाठी ! यह बदमाश नाई हमें भी अपनी बीवी के साथ मिला बैठा ! क्यों ओ फीने...तो हम इस की जोरु के समान हुए ?

फीना : (घबरा कर) हां सरकार !

बांगी : हां सरकार ? मार लाठी ! सालो तुम सब बदमाश हो जाओ हम तुम सब को एक एक मास की तनखाह जुर्माना करते हैं। जा मोहतबर का बुला ला।

(फीना चला जाता है। भीमा तखतपोश पर बैठे बांगी के पैर दबाने लगता। फिड्डू अपना उस्तरा आदि निकाल कर फटकने लगता है)

बांगी : (पैर दबाते हुए भीमे से) मार लाठी ! बोल क्या तनखाह है तेरा ?

भीमा : यही सरकार !

बांगी : मार लाठी ! यही क्या ?

भीमा : यही जुरमाना माई बाप ! मैंने और फीने ने कभी तनखाह नहीं पायी, सब जुरमाने में ही कट जाती है।

फिड्डू : जान से मार डालिये पर जुरमाना मत कीजिये माई-बाप मेरे घर वाली......

बांगी : घर वाली के बच्चे ! तुम्हें नहीं मालूम था कि हम

जम्मू के राज दरबार में जा रहे हैं और तुम्हें हमारी हजामत कर के पोशाक पहनानी है ।

फिड्डू : (चापलूसी से) शेरों की हजामत कौन कर सकता है माई बाप ! बिना हजामत के भी आप के चेहरे का जलाल सह पाना मुश्किल है । तभी तो मेरे घर वाली कहती है कि सारे दरबार में ऐसा सुन्दर और बहादुर एक भी मर्द नहीं होगा ।

बांगी : (खुश हो कर) तब तो तुम्हारे घर वाली कुछ समझदार मालूम होती है ।

फिड्डू : बात ही मत पूछिये सरकार । वह राज दरबारों में जन्मी पली है माई बाप ! वजीर दीवानों की तो बात ही जाने दीजिये खुद महारानियां तक उस की कसम नहीं खातीं ।

बांगी : अच्छा ?

फिड्डू : आप अच्छा कहते हैं स्वयं महाराज भी उसका कहा नहीं टालते । मगर बात यही है कि......

बांगी : तो क्या वह हमारी सिफारश नहीं कर सकती ?

फिड्डू : कर क्यों नहीं सकती माई बाप । पर यही बात है कि स्वभाव में ज़रा तेज है । उस पर राज दरबारों में जन्मी पली है । आप जानते हैं कुछ लीये दीये बिना वहां कौन बात भी करता है ।

बांगी : मार लाठी ! तब वह कुछ मांगती है ?

फिड्डू : (हंसते हुए) हां यही तो मज़ा है सरकार ! वह बात-

बात पर रुपये और अशरफियां थामने वाली भला सूखी बातों में क्या ......

बांगी : मार लाठी ! अरे मूरख हम कोई सूखी बातें लड़ा रहे हैं।

फिड्डू : नहीं नहीं सरकार ! यह बात नहीं पर शायद वह कुछ लीये दीये बिना आगे बात चलाये या नहीं। कुछ कह नहीं सकता। आगे आप खद भी सब कुछ जानते हैं।

बांगी : (जेब से थैली निकाल कर देते हुए) यह ले पचीस रुपये हैं काम सवर जाने पर और भी देंगे। उसे कहना महाराज साहब के पास हमें राजा बनाने की बात चलाये। समझे ?

फिड्डू : (रुपये थाम कर) समझ गया सब समझ गया सरकार ! मगर इतनी बड़ी पदवी पा लेने पर आप को इस गरीब नाई की याद रहे गी भी या नहीं ? मगर गरीबनबाज आप का काम बन जाये तो हमें उस में भी बड़ी प्रसन्नता होगी। मगर यह रुपये आप रहने दीजिये ! क्या पता वही मुझ पर नाराज हो जायें और कहे कि मूर्ख तू ने सरकार से रुपये क्यों लिये ? गरीब आदमी ठहरा ! जनाब सब बातों से डर लगता है।

बांगी : मार लाठी ! बुद्धू यह रुपये हम अपनी खुशी से दे रहे हैं। काम बन जाने पर और भी इनाम मिले गा। तुम लोग तो अपने सेवक ठहरे। यहां किस बात की कमी है ?

फिट्टू : (रोनी सी आवाज़ में) ईश्वर आप की लाख बा
आयु करे ! मैं कहता हूँ मेरी उमर भी आप को लो
बहुत-बहुत पदवी बढ़े ! आप के समान कौन है
गरीबों की परवरिश करने वाला !

बांगी : (कुढ़कर) मार लाठी ! बस हमें देर हो रही है ।

फिट्टू : (घबराहट में) हां ! हां ! लीजिये सरकार पह
आप की पगड़ी ठीक कर दूं । जा वे भीमें सरका
की ढाल तलवार ले आ ।

(मूंछ पर ज़रा कैंची लगाता है । फिर दूर हट क
पोशाक की सजावट देखते हुए)

सरकार आप बड़े लोग भी पूर्व जन्मों में मोतियों
दान कर के पैदा होते हैं । तभी इतना जाहोजला
और सुख सौभाग्य मिलता है ।

भीमा : हां......कहीं तो मानी । सरकार को वह रूप च
है कि जैसे इन्दर देवता ही आ गये हों ।

(बांगी मूंछों पर ताव देते हुए मुस्कराता है)

फिट्टू : शावाश कहिये इस नाई को ! मेंने रूप ही ऐसा संवा
दिया है कि धाक बैठ जाए गी सरकार की भ
दरवार में ।

बांगी : अच्छा ! अच्छा जाओ तीनों नफर गुड़ का एक ए
ढेला इनास ले लो । मुझे नजर मत लगा देना ।

(इसी समय सफेद डोगरा पोशाक और रंगदार पग

पहिने अधेड़ आयु के मोहतवर कलगीधर का प्रवेश करना)

कलगीधर : (प्रवेश करते ही हैरानी जताते हुऐ) जय देव ! जय देव ! मैंने समझा कोई राजा साहब पधारे हैं। आप की कसम पहचानना तक मुशकिल है। (फिड्डू की ओर) शाबाश भाई फिड्डू तेरा कमाल। क्या रूप संवारा है सरकार का ।

फिड्डू : (झुक कर) यह सब आप की कृपा है। (बांगी से) मगर सरकार ! ऐसा मोहतवर भी कहीं तलाश करने पर आप को डूसरा नहीं मिल सकता। क्या चतुराई और सूझ-बूझ पाई है इन्होंने।

बांगी : अच्छा तो मोहतवर जी त्यारी हो चुकी ?

कलगीधर : हां सरकार सब मुक्कमिल है। दस मटके घी, वीस मन गुड़ और इसी मुताकित रसद आदि लदवा कर आगे-आगे भेज दिये गये हैं। वाका सरकार की पोशाकें और दूसरे साजसम्यान यह भीमा और फीना साथ ले चलें गे। हां, पांच सौ रुपये और पांच सौ सोने की मोहरें सरकार अपने साथ रख लें।

बांगी : (क्रोध में) क्यों ? यहां कोई लूट मची है ? अच्छा मोहतवर है तू ! हमें उजाड़ना चाहता है ? मार लाठी !

कलगीधर : (हंस कर) सब कुछ जानते हुए भी सरकार खैसी भोली बातें करते हैं।

बांगी : मार लाठी ! कुछ सोचो तो सही। इतना अनर्थ ! इतना खर्च ?

कलगीधर : सरकार खुद विचार करें । भरे दरबार में कम कम पांच सौ स्वर्ण मोहरें तो महाराज को भेंट कर ही पड़ेंगी तभी राजगी का खिताब पाने की बात ब बढ़ेगी ? जमींदार से राजा बनना भी कोई छोटी बात नहीं है सरकार ! क्यों फिड्डू ?

फिड्डु : हां सरकार ! जैसा-जैसा काम वैसा-वैसा दाम ।

बांगी : (कुढ़ कर) मार लाठी ! फिर ?

कलगीधर : राज दरबारों में यह बातें आगे चलाने बाले होते दीवान और वजीर लोग ही । इस लिये बजीर साह को भी कुछ पुष्प पत्र भेंट करना ही पड़ेगा ।

बांगी : हूँ ?

कलगीधर : बाकी रहा आप का वीरपुरियों के साथ मुकदमा अपने हिस्सादारों की सारी की सारी जमीन दब लेना भी तो कोई मामूली बात नहीं है सरकार ! वह मुआमला तो उन दीवान जी ने ही दबा रख है ! नहीं तो अब तक लेने के देने पड़ जावे । उन दीवान जी को भी तो कुछ न कुछ देना ही होगा लालच तो सब के साथ सरकार । क्यों फिड्डू ?

फिड्डू : हां सरकार ।

बांगी : मार लाठी ! वह पहले भी तो दिया था ।

कलगीधर : आप भी क्या भोली बातें करते हैं । मुकदमा केवल जमीन का नहीं, चार हत्याएं करने का अल्जाम साथ था । वह जो उस दीवान जी ने आप के रोते चिल्लाते मुखालिफों को कचहरी से बाहिर निकलवा दीया था ।

यह सब उन्हीं रुपयों की करामात समझिये। आगे आप खुद समझदार हैं, हमारा काम तो केवल अरज़ करना है। (राज़दाराना अंदाज में) मगर सरकार हत्याओं वाला मुआमला अभी खतम नहीं सिर्फ दवा दिया गया है।

बांगी : मार लाठी ! यह तो चूहे पर बिल्ली और बिल्ली पर कुत्ता वाली बात हुई।

कलगीधर : हां सरकार बात ऐसी ही है। यहां एक पर एक भारी है। लेकिन सिर्फ एक सीढ़ी और ऊपर पहुँ ने की देर है। जब आप खुद राजा बन जाएंगे तो फिर किस का और कैसा मुकदमा ? इस तरह के अनेक मुकदमे तो आप के सामने पेश हुआ करेंगे। क्यों फिड्डू ?

फिड्डू : हां सरकार ! ईश्वर आपका इकबाल बढ़ाये। एक बार बड़े महाराज बहादुर का अरशाद हो जाना चाहिये। मगर सरकार जानबख्शी हो तो एक अरज करूं ?

कलगीधर : हां हां ! कहो सरकार सुन रहे हैं। तुम भी सूझ-बूझ वाले सियाने तजुर्बाकार आदमी हो।

फिड्डू : पर सरकार (भीमे और फीने की ओर देख कर) सब के सामने तो ......

कलगीधर : (पास खड़े सिपाहियों से) तुम लोग बाहिर चल कर समान सम्भालो।

फिड्डू : (सिपाहियों के चले जाने पर भेद भरी वाणी मे) बुरा

मत मानिये सरकार ! यह हत्याओं वाला भेद अगर खुल गया तो गज़ब हो जायेगा ! ज़मीन जायदाद की बात छोड़िये उल्टे सजा हो जाए गी ।

बांगी : मार लाठी ! वह कैसे ?

फिड्डू : (मोहतवर से नजरें मिलते हुए) ऐसे बातों केलिये दीवारों के भी कान होते हैं सरकार। हम लोग चाहे आप के नौकर चाकर ही हैं पर पेट ही के लिये तो माई बाप ।

बांगी : (कुढ़ कर) मार लाठी ! तू बात बता ?

फिड्डू : मेरी और मोहतवर जी की बात दूसरी है । मगर यह भीमा और फीना ? इन से आप का कोई भेद लुका-छिपा तो नहीं। इन लोगों को कभी कभार इनाम कराम मिलते रहना चाहिये सरकार ! पर आप ने तो कभी तनखाह तक नहीं दी। आगे आप खुद जानकार हैं।

बांगी : मार लाठी ! तुम्हारा मतलब ?

फिड्डू : मतलब गरीबपरवर यह कि इन नौकर चाकरों की खुशी में भी आप का ही गौरव , और लोभ लालच छिपे लगे रहें तो भेद भाव भी ढके छिपे रहते हैं ।

कलगीधर : (सिर हिला कर) बात है तो राजनीति की सरकार ।

बांगी : मार लाठी ! तो दे दो सब को दस दस रुपये ।

फिड्डू : नां नां ! सरकार सभी को एक ही लाठी से मत

हाहिये। अगर इन मामूली नौकर चाकरों को दस-दस मिलें तो इन मोहतवर जी को पूरा सौ मिलना चाहिये, हां ! क्यों मोहतवर जी ?

कलगीधर : मैं क्या कहूँ ? यह तो सरकार की अपनी समझ है ?

फिड्डू : अन्नदाता ! यह सब तो आप जानते हैं। आप केवल मोहतवर जी के लिये अरशाद फर्मा दें। मेरा फैसला तो खुद वहीं करदें गे।

बांगी : मारो लाठी ! जो लेना हो तुम भी ले लो जाकर !

फिड्डू : हां ! यह होते हैं खानदानी लोगों के अरशाद। यहां किस बात की कमी है।

बांगी : मार लाठी ! खानदानी की बात छोड़ो (बाहिर की आवाज सुन कर) यह आवाज कहां हो रही है ?

भीमा : (सामने आ कर) मीयां चोहलो किसी के हल का फल घड़ रहे हैं सरकार।

बांगी : (एक दम क्रोधित स्वर में) उस ने यह काम फिर आरम्भ कर दिया ? जा उसे हमारे सामने पेश कर।

[भीमा जाता है और बांगी क्रोध में इधर से उधर चक्कर काटते बड़बड़ाता है]

[डूबने पर कमर कस ली हैं मुर्ख भाई ने ! हम ऊपर उठना चाहते हैं तो यह नीचे खींचने पर तुला है ! जी चाहता है खड़े खड़े खून पी डालूं इस पापी का !]

कलगीधर : सरकार का कुढ़ना बजा है।

फिड्डू : इसी को कहते हैं कुल मे कलंक।

[हाथ में हथौड़ा उठाये और काम करने के कपड़े पहने पचीस वर्षीय युवक चोहलो का प्रवेश]

चोहलो : (प्रवेश करते ही शान्त स्वर में) राम राम भाई जी! आप ने मुझे याद फर्माया है?

बांगी : (गुस्से में फुंकारते हुए) मार लाठी! तुम्हें हजार बार कह चुका हूँ कि यह नीच धंधा छोड़ दे।

चोहलो : यह काम नीच है भाई जी?

बांगी : जिज का नाम मात्र सुन कर दुश्मन वैरी थर-थर कांपने लगते हैं। जिस का प्रताप देख कर राजे राजवाड़े भी ईर्षा करते हैं। उसी वांगी चाड़क का छोटाभाई हो कर तूं यह बढ़ेई और लुहारों बाला काम करने लगा।

चोहलो : (धैर्य देवक) भाई जी इन हलों की बदौलत ही तो धरती में से वे मोती जैसे दाने उपजते हैं जिन्हें खा कर ही बड़े बड़े वीर बहादुर और ज्ञानी, साध-संतों के जीवन चलते हैं। मुझे तो यह काम करने में कोई हीनता दिखाई नहीं देती।

बांगी : मार लाठी! तुम्हें अपना कमीनापन दिखाई नहीं देता?

चोहलो : जिन हथयारों की बदौलत मनुष्यों को रोज़ी मिले

और देश और धर्म की रक्षा हो, उन को घड़ने बनाने में तो मुझे कोई कमीनापन दिखाई नहीं देता ?

बांगी : यह काम नीच काम नहीं तो क्या है ?

चोहलो : मुझे तो इस काम के करने में इतनी ही शान्ति और प्रसन्नता होती है जितनी किसी पुजारी को उसने भगवान की पूजा करने में ।

बांगी : (अत्यंत क्रोध में) बेशर्म, नीच, कुल कलंक !

चोहलो : (तीखी संयत आवाज़ में) भाई जी क्षमा कीजिये । में ने आप का आदर मान करते हुए आज तक सब कुछ सह लिया । मगर सहनशीलना की भी हद्द होतीहै । मैं आप के आगे आज फिर हाथ बांध कर प्रार्थका करता कि जान बूझ कर मेरा मुंह मत खुमवाइये ।

बांगी : मार लाठा ! रहने दे यह आदर-मान की बातें ! तेरी इन काली करतूतों ने सारे कुल के माथे पर कलंक का टीका लगा दिया है । बढेइयों और लुहारों का काम नीच नहीं तो क्या है ? तुम्हें अपनी लाज शर्म नहीं तो इस ऊंचे खानदान का ही लिहाज़ रखते ।

चोहलो : भाई जी ! मैं फिर बिनती करता हूँ कि खामखाह मेरे काम में दखल मत दीजिये । मैं ने अच्छी प्रकार सोच बिचार कर ही यह मेहनत मज़दूरी करने का रास्ता अपनाया है । मुझे इसी में सुख-सतोष मिलता है ।

बांगी : (क्षुभित स्वर में) घर में दुध, घी, आनाज के भण्डार

भरे हैं । अस्तबल में बढ़िया घोड़े बन्धे हिनहिना रहे हैं । सोने चांदी के संदूक भरे पड़े हैं । तुम्हें कमी किस चीज़ की है जो यह नीच काम करने बैठे हो ?

चोहलो : यह अत्याचारों के ठाठ-बाठ और पापों के साजोसमान मेरे किस काम ?

बांगी : मार लाठी, कायह कहीं का ! यह राजलक्ष्मी सदा से बहादुरों के चरणों में लोटती आई है । इस का उपभोग करने केलिये भी बहादुर दिल की जरुरत है ।

चोहलो : स्वार्थी और लुटेरे लोग सदा अपने पापों को वीरता और बहादुरी का नाम देते आये हैं । अपने स्वार्थों के मद में अंधा पापी रावण भी यही कहता था ।

बांगी : (अत्यंत क्रोध में) ओ......चोहलो !

चोहलो : बस रहने दीजिये भाई साहब यह खानदानी बड़प्पन की बातें ।

बांगी : (दांत पीसते हुए) ओह... चोहलो ! क्यों जलती में तेल डालते हो !

चोहलो : (व्यंगय मय हंसी हंस कर) क्यों ? सांच कड़वा है ?

बांगी : (तिलमिला कर) मोहतवर ! फिड्डू ! तुग......

चोहलो : (लापरवाही से) इन्हीं चापलूसों ने तो आप का दिमाग बिगाड़ा है । इसी लिये अपने सिवा दूसरे सभी नीच और हीन सुझाई देते हैं । मगर याद

रखिये मैं इन काली करतूतों में आप का भागीदार ! नहीं बन सकता। इस पाप के ठाठ बाठ से तो मेहनत मजदूरी करके जीना लाख दरजे बेहतर है।

बांगी : (क्रोध से फुंकारते हुए) चोहलो सावधान ! तुझे अपनी जान प्यारी है तो हट जा मेरे सामने से (तलवार के दस्ते पर हाथ रखते हुए) नहीं तो --

चोहलो : नहीं तो इस तलवार से सिर काट लेंगे, यही ना ? मुझे अपनी जान की अपेक्षा अधिक चिन्ता आप की कुबुद्धि की है। मैं भी उसी माता का दूध पिया है जिसका आप ने ! आप की तलवार बहुत तेज ही सही, पर इसे बनाने घड़ने वाले (हथोड़ा दिखा कर) इस हथौड़े को मत भूलिये।

बांगी : (क्रोध में तलवार खैंचते हुए) अच्छा ! तो आज तुम्हारी मौत ही तुम्हें पुकार रही है ! हमारे सामने तेरी यह मजाल ?

[बांगी का तलवार तानकर आगे बढ़ना। चोहलो का हथोड़ा तौल मुकाबले के लिये तैय्यार हो जाना। भयभीत मोहनवर और फिड्डू का डरना और अचानक रणपत का प्रवेश करके दोनों के बीच आ खड़े होना]

रणपत : शान्ति...शान्ति यजमानों शान्त हो जाओ। (मुस्करा कर दोनों की ओर देखते हुए) यह सूर्य और चन्द्रमा कैसे एक दूसरे के सामने डट गये हैं ? भगवती दुर्गा आप का कल्याण करें, ईश्वर आप को सत्बुद्धि प्रदान करें।

[दोनों भाई स्तब्ध से खड़े रह जाते हैं। बांगी का

तलवार मियान में चली जाती है और चोहलो अप
हथोड़ा नीचे फैंक कर रणपत के पैर छूता है]

चोहलो : (रणपत के पावों पर झुकते हुए) चरणबं
स्विकार करें पुरोहित जी ।

रणपत : (चोहलो को उठाते हुए) आज राम और लक्षन
भला यह वाली और सुग्रीव का रूप कैसे धारण
लिया ? वीर वांगी जी का क्रोध क्यों इत
प्रचंड है ?

बांगी : (फूहड़ सी आवाज़ में) चरणबंदना पुरोहित जी
इस चोहलो की मौत पुकार ही है। इसे आज मे
ही हाथों मरना है ।

रणपत : शिव, शिव, शिव ! क्रोध बहुत चांडाल है। चोह
तो आप का सगा भाई है। क्षमा वड़न को चाहि
छोटन के उत्पाप । इन से अगर कोई अपराध
हुआ हो तो आप को क्षमा कर देना चाहिये। ऐ
शब्द भी मुंह से लाना महा पाप है। ईश्वर भगवा
आप को इन दुर्वचनों के लिये क्षमा करें। आप दो
का कव्याण हो !

बांगी : इस कुल कलंक का इस घर में पैदा होना ही महाप
है !

रणपत : राम, राम, राम ! आप अब भी क्रोध में है । वी
पुरुषों को अकारण क्रोध करना शोभा नहीं देता
आप दोनों के जीवित रहने में ही कुल
शोभा है।

बांगी : कलंक नहीं तो किया ? चाड़क क्षत्रियों के उच्च कुल में पैदा होकर भी जो बढ़ई लुहारों का नीच काम करे उसे आप क्या कहें गे ?

चोहलो : (व्यंग्य पूर्वक) पुरोहित जी ! इन का विचार है कि उच्च कुल के लोगों को कोई काम धाम करने की आवश्यकता नहीं। उन का काम केवल लूट खसूट कर के मौज मजे उड़ाना ही है।

बांगी : (गुस्से में) चोहलो !

रणपत : (चोहलो से) आप बीच में मत बोलिये छोटे मीयां ! मेरी बात चीत बांगी जी से हो रही । (बांगी से) यजमान जी ! बस इतनी बात पर इतना क्रोध ?

बांगी : मार...... आप के विचार में यह छोटी सी बात है ? क्या इन कामों से हमारे कुल को कलंक नहीं लगता ?

रणपत : काम करने में कोई कलंक नहीं। परमात्मा ने स्वंय ही विश्वकर्मा का रूप धारण कर के संसार कला कौशल का प्रचार किया था। यह तो लोक सेवा के उपयोगी काम हैं। अगर यह काम न होते तो मनुष्य दशा पशुओं से भी हीन होती।

बांगी : वाह ! अच्छी विद्या पढ़ी है तुम ने काशी में जा कर ! हम ऊंचे घरानों के लोग भी यह नीच काम करें ?

रणपत : जिन कार्यों से दूसरों को कष्ट पहुचे उन्हे ही हीन कहा जाता है। जिन कार्यो से सब को सुख सुविधा में बृद्धि हो समाज का कल्याण हो उन्हें करने में कोई हानता नहीं। यह शास्त्र का आदेश है।

बांगी : इस का मतलब यह हुआ नि हम क्षत्रि राजपूत अ
कुल मर्यादा को त्याग कर हीन शूद्रों जैसे काम करें
हमारा धर्म तो लड़ना मरना है।

रणपत : देश और धर्म पर कोई विपत्ति टूट पड़े तो उन
रक्षा के लिये लड़ना मरना सभी जीबित मनुष्यों
कर्तव्य है। परन्तु लड़ना मरना कोई काम धंदा
नही हो सकता।

बांगी : काम धंदा नहीं ?

रणपत : नहीं ! काम धदा तो उन कार्यों का नाम है जि
को करके हम दूमरों की सेवा और अपनी रोटी रो
कमा सकें। कृष्ण चाहे गवाले थे। पर आज सा
संसार उन की पूजा करता है

बांगी : हम त्रत्रियों का धर्म ?

रणपत : क्षत्रियों का धर्म है देश और धर्म की रक्षा के लि
अपने जीवन तक बाजी लगा देना। विद्या पढ़ना
दान देना ! मगर जब कुछ कमायेंगे ही नहीं तो
दान कहां से देंगे ? नंगा नहाये गा क्या और पहं
गा क्या ?

चोहलो : पुरोहित जी ! भाई साहिब खानदानी इसी में समझ
हैं कि दूसरों की कमाई पर हाथ साफ किया जा
स्वयं मेहनत के काम करना तो हीनता है।

बांगी : (भड़क कर) तू बीच में मत बोल चोहलो !

चोहलो : क्या मैं झूठ कहता हूँ ? आप के ठाठ-वाट लूट क

म ल नहीं तो क्या है। आप ने कब हल चलाई ? कहां ढारे डगर पाले ? या और कोई काम धंदा किया ?

बांगी : चोहलो ! आज तेरी मौत ही तुम्हें पुकार रही है !

रणपत : हरि ओम् ! शिव, शिव, शिव ! ईश्वर आप को क्षमा करें। बांगी जी आप के इस उच्च कुल मे भाई भाइयों में यह झगड़े शोभा नहीं देते। अगर कोइ ऐसी वैसी बात हो भी तो आप दोनों को मिल बैठ कर निपटारा कर लेना चाहिये।

चोहलो : पुरोहित जी ! जब तक यह भाई साहिब वीरपुर वाले भाइयों की जमीन का भाग उन को नही लौटा देते मेरा इन के साथ कोई सम्बन्ध सरोकार नहीं रह सकता !

बांगी : चल हट ! बड़ा आया वीरपुर वालों का हिमायती ! वह जमीन मैंने तलवार के जोर से ली है और तलवार के बल पर दूंगा ! जिस में शक्ति हो ले जाये !

रणपत : बलवान और शक्तिशाली आप ही हैं। ईश्वर आप को और भी शक्तिशाली बनायें। परन्तु शक्ति की सफलता है अपने से कमजोर की रक्षा करना दुखियों को इन्साफ दिलाना और उन का कष्ट दूर करना !

बांगी : (निरुत्तर सा हो कर) मार......पुरोहित जी ! मैं कब चाहता हूँ यह रोज - रोज के लड़ाई झगड़े ?

मुकदमा राज दरबार में चल रहा है जो फैसला होगा देखा जाए गा । अब मैं क्या कर सकता हूँ। मेरी जगह आप ही कर दीजिये इस झगड़े का निपटारा!

रणपत : यजमानों ! मेरे लिये तो तुम दोनों पक्ष एक समान हो मैं क्या पचायत कर सकता हूँ। मेरी तो यही कामना है कि तुम सब का लोक परलोक सुधरे तुम सब सुखी जीवन व्यतीत करो ।

चोहलो : नहीं नहीं पुरोहित जी इस बात का निपटारा आप को ही करना होगा । आप हमारे कुल के हितचितक पुरोहित हैं। भाई साहेब ने मान लिया है, और मेरा विश्वास है, कि दूसरे पक्ष को भी कोई एतराज नहीं हो सकता । (रणपत के पांव छू कर) ब्राह्मण देवता ! इस झगड़ें दा फैसला कर के आप ही हमारे कुल को बरबाद होने से बचाईये ।

रणपत : (कुछ काल चुप रह कर) बांगी जी ! क्या आप सच्चे हृदय से कह रहे है ?

बांगी : (हिचकिचाते हुए चुप्प रहता है)

रणपत : बोलियें यजमान जी मैं आप से पूछ रहा हू ?

बांगी : (ढिलमिल सी आवाज़ में) हां ।

चोहलो : (ज़ोर दे कर) हां श्रीमान हां। हम दोनों भाई सच्चे हृदय से कह रहे हैं ! क्षत्रियों की एक जुवान होती है। भाई जी ने एक वार जो मुंह से कह दिया पत्थर पर लकीर समझिये !

रणपत : अगर यह सच है तो उठाईये यज्ञोपवीत की सौगन्ध और कर दीजिये लिखित कि आप लोग मेरा किया निर्णय स्वीकार करेंगे।

चोहलो : (यज्ञोपवीत छू कर) मैं इस धर्म सूत्र की सौगन्ध कर के प्रतिज्ञा करता हूं कि आप का किया हुआ निर्णय स्वीकार करूंगा !

रणपत : (बांगी से) बांगी जी आप ?

बांगी : (चिढ़कर) मार लाठी ! में भी मान लूंगा।

चोहलो : (मोहतवर से) लाइये मोहतवर जी कलम दवात और लिखिये हम दोनों भाईयों की तरफ से यह लिखित ! (मोहतवर हिचकिचाते हुए अन्दर से कागज़ कलम आदि ले आता है परन्तु कुछ देर चुप्प-चाप बांगी की ओर ताकता रहता है)

चोहलो : लिखिये लिखिये मोहतवर जी आप खड़े खड़े क्या ताक रहे हैं ?

(मोहतवर अनमना सा एक तरफ खड़े खड़े लिखने लगता है, और 'फिड्डू' मोहतवर तथा बांगी को इशारे कर के मना करता है। परन्तु उस की तरफ कोई नहीं देखता)

चोहलो : (फिड्डू की तरफ देख कर डांटते हुए) क्यों वे फिड्डू तुम्हारी क्या जान निकल रही है ?

फिड्डू : (रोनी सी आवाज में) नहीं श्रीमान जी, मेरी तो ऐसी ही आदत है। आप मालिक लोग ठहरे। चांहे अपना

घर ही जला डालें इस में हमें क्या लेना देना !

[मोहतवर लिखा हुआ कागज चोहलो की ओर बढ़ाता है]

चोहलो : मोहतवर जी पहले आप कीजिये इस पर अपने हस्ताक्षर ।

मोहतवर : (चुप चाप हस्ताक्षर करता है)

चोहलो : (फिड्डू से) ले ओ फिड्डू ! लगा तू भी अंगूठा ।

फिड्डू : मुझ गरीब का क्या है माईबाप ! (हिचकते हुए) अच्छा जब सब ने कर दिया तो मेरा भी करा डालिये। मगर मालूम नहीं घर वाली क्या कहे ! (अगूठा लगाता है)

चोहलो : (रणपत से) पुरोहित जी । आज आप का आना ही शुभ हुआ, नहीं तो जाने क्या हो जाता । अब चलिये वीर पुर वाले भाई जी से भी लिखित करवा दूं ।
(रणपत और चोहलो चले जाते हैं । बांगी सिर झुकाए चिंतामग्न खड़ा रहता है । मोहतवर और फिड्डू आपस में इशारों से बातचीत करते हैं फिर मोहतवर बांगी के पास जा कर आहिस्ता से बात करने लगता है ।

मोहतवर : सरकार !

बांगी : (चौंक कर) क्या है ?

मोहतवर : यह आप ने क्या कर डाला ! उस कल के छोकरे

रणपत को सरपंच मान लिया ! उस का क्या भरोसा ! हमारा पक्ष कमजोर तो है ही।

बांगी : (हैरान सा) तो क्या यह ठीक नहीं हुआ ?

मोहतवर : बहुत बुरा हुआ सरकार। वहां राज कचहरी में मामला दब दबा चुका था। थोड़े दिनों में आप स्वयं ही राजा बन जाते, तब कैसा मुकदमा और कौन चलाता !

बांगी : (क्रोध में) तब तुम उस समय क्यों मर गये थे ! अब लगे हो अकल के पंछी उड़ने ? मार लाठी !

मोहतवर : मैं तो उस समय भी इशारे से बात समझाई थी मगर सरकार ने देखा तक नहीं। मैंने भी समझा सरकार कुछ सोच विचार कर ऐसा कर रहे हों गे।

बांगी : (खीझ कर) ओ मार लाठी सरकार को ! इस घर के भेदी चोहलो ने हमारी अकल ही खराब कर डाली है !

पिट्टू : (पास खिसक कर) एक अर्ज करू सरकार ?

बांगी : मार लाठी ! दूर हट यहां से ! सुसरे तुझे भी सूझ नहीं आई।

फिड्डू : हमारी अकल तो सरकार के पीछे है माईवाप ! जब आप ही ढीले पड़ गये तो हम क्या कर सकते थे। मगर अभी भी बात बिल्कुल विगड़ी नहीं।

मोहतवर : अच्छा ! है कोई उपाय तुम्हारी समझ में ?

फिड्डू : पूरा उपाय तो श्रीमान घर वाली से पूछ कर
बताऊंगा मगर हो वह कहा करता है कि
तांबा जा को लगे नरम होय तत्काल । सो प
कुछ दे दिला कर इस पुरोहित को ही नरम क
पड़ेगा । परन्तु इस छोटे मीयां का कोई भरोसा
जाने क्या कर बैठे ।

मोहतवर : हां इस छोटे मीयां चोहलो के रहते हमारी सफल
बहुत मुश्किल है, लेकिन तू पहले किसी तरह पुरो
से वह लिखित वापस निकाल दे ।

फिड्डू : मैं अपनी घर वाली से कहे देता हूँ सरकार । प
आप जम्मू के दरबार से हो आइये, फिर इस
देखा जाए गा ।

मोहतवर : हां सरकार दोपहर हो रही है सब काम त्यार है
भात खा लें तो चला जाए ।

बांगी : भात ? मार लाठी ! हम ने हज़ार बार कहा कि भ
हमें नहीं पचता । ससुरे अब भात खिला खिला
मारना चाहते हो ?

मोहतवर : नहीं सरकार ! राजा लोगों के भोजन करने ही
भात खाना कहते हैं । रोटी पूरी सब कुछ त्यार
श्रीमान को जो रुचता हो खा लें ।

बांगी : अच्छा चल (फिड्डू से) देखो फिड्डू तुम अपनी
घर वाली को भी साथ ले चलना ।

फिड्डू : (हैरानी से) घर वाली को ? (जाते जाते) अच्छा सरकार कोसस करूंगा।

[वांगी मोहतवर अन्दर की ओर और फिड्डू बाहिर की ओर निकल जाता है]

OCO

चतुर्थ दृश्य

[गांव के तालाव किनारे वट वृक्ष और शिवालय, समय दोपहर। एक बूढ़ा किसान जिस के गले में बड़ा सा गलगंठ है। प्रवेश कर के कुछ दूर पर जुता उपारते हुए आगे बढ़ कर मंदिर की तरफ श्रद्धा पूर्वक प्रणाम करके वापिस जुता पहनने लगता है परन्तु गलगंठ के कारण जूता दिखाई नहीं देता। फिर पीछे हट कर देखना है तो जूता अपने स्थान पर ही पड़ा नजर आता है। इसी प्रकार दो तीन वार नाकाम कोशिश करता है। तभी एक युवक किसान चंदू वृद्ध की हरकत पर मुस्कराते हुए प्रवेश के कर के पास पहुँच कर ऊंचे स्वर में पुकार कर वहरे वृद्ध को प्रणाम करता है]

चंदू : (बूढ़े के पास पहुँच) चाचा ! चरणवंदना !

बूढ़ा : (खीझ कर) मरे ससुरा चाचा ! मज़ाक मत कर, मेरा जूता दे दे।

चंदू : जूता तो वहीं तुम्हारे पैरों के पास पड़ा है चाचा।

बूढ़ा : शैतान कहीं का ! मुझ बूढ़े से मज़ाक ? पास आता हूं तो जूता उठा लेता है और दूर जाता हूं तो वही रख देता है ! मैं तेरी चालाकी समझता हूं।

चंदू : (जूना पैरों से छूवाते हुऐ) यह रहा चाचा तेरा जूता ! तेरी कसम मैंने नही छुपाया । यहीं पड़ा था !

बूढ़ा : (एक पांव पहन कर) ला दूसरा भी । मुझे देर हो रही है।

चंदू : (दूसरा जूता पहनाते हुए) जरा बैठ जाओ चाचा तुम्हें एक बात सुनाऊं।

बूढ़ा : बात ? भूख लगी है मगर, सुना तुम्हारी बात तो सुन ही लेता हूं। (बैठते हुए) जरा ज़ोर से सुनाना ।

चंदू : (ज़ोर से चिल्ला कर) चाचा वह जो है न तुम्हारा पड़ोसी चौधरी !

बूढ़ा : हां— वह अमराई वाला चाड़क ?

चंदू : हां, उन की जमीन का झमेला था नां अपने भागीदार बांगी के साथ !

बूढ़ा : हां बड़ा जुल्म किया है उसके साथ उस जालम वांगी ने । उस वेचारे की सारी जमीन जायदाद भी छीन ली और भाई बेटे भी कतल कर डाले ।

चंदू : अच्छा ?

बूढ़ा : अच्छा नहीं तो क्या ? कहते भी हैं न जिस की लाठी उस की भैंस !

चंदू : सुना है अब उस झगड़े का फैसला पंचायत में होगा !

बूढ़ा : (अपनी कहते हुए) तू अभी कल का बच्चा है तुम्हें

क्या मालूम । इन चौधरियों के दादा सौतीले भाई थे । हम तब बहुत छोटे छोटे थे तो इसी स्थान पर पंचायत बैठी थी और दोनों भाइयों ने बड़ी समझदारी से आधी आधी ज़मी बांट ली थी ।

चंदू : तुम्हारी क्या आयु है चाचा ?

बूढ़ा : (विचार कर) यही कोई पांच कम सौ ।

चंदू : मगर चाचा ! इस बांगी को यह जुल्म करते देख कर भी गांव वालों ने नहीं रोका ?

बूढ़ा : रोकता कौन ? वह पापी धन और बल में पूरा रावण है रावण ! चौधरी ने जब जम्मू के राज दरबार में फरयाद की तो वहां भी बांगी ने धन से सब के मुंह बन्ध कर दिये ।

चंदू : अच्छा !

बूढा : अच्छा नहीं तो क्या ? धन का मद किस को पागल नहीं कर देता ?

चंदू : सुना है अब उसी झगड़े का फैसला करने के लिये दोनों फरीकों ने विद्वान पुरोहित रणपत को अपना पंच स्वीकार कर लिया है ।

बूढा : मैं नहीं मान सकता । कल का छोकरा रणु करे गा फैसला और बांगी माने गा उसे ? इस में कोई चालाकी होगी ।

चंदू : मगर चाचा बांगी चाड़क का छोटा भाई है ना चोहलो ! उसी ने यह सब कराया है ।

बूढ़ा : मीयां चोहलो ? हां उस की कही तो मानी। वह तो कोई सत्युग का आदमी है। मेहनत मज़दूरी कर के अपना गुज़ारा करता है मगर सच्ची बात कहने में कभी नहीं डरता।

चंदू : उसी सत्युगी चोहलो ने प्रतिज्ञा ठान ली है कि जब तक वीरपुर वाले भाइयों का भाग उन को नहीं देगा, वह भी इस वांगी के साथ अपना कोई सम्बन्ध सरोकार नहीं रखेगा। न हुआ तो वह अपनी जमीन अलग कर के वीरपुर वाले भाइयों को दे डाले गा।

बूढ़ा : हां भैया, वह तो अपनी प्रतिज्ञा पर मर मिटने वाला बहादुर पुरुष है। मगर इस पुशतैनी झगड़े का फैसला करना भी हिम्मत का काम है !

चंदू : चाचा ! सब कहते हैं कि पुरोहित रणपत ने भी इस झगड़े का न्याय करने की प्रतिज्ञा ठान ली है।

बूढ़ा : बात तो बड़ी कठिन है। मगर है तो यह रणपत भी अपने उन बाप दादा की ही औलाद जिन की न्याय प्रियता की धाक इस सारे देश में थी !

चंदू : अच्छा ?

बूढ़ : अच्छा नहीं तो क्या ?

[इसी समय वहंगी उठाये हुए भीमा के आगे मोहतवर और फिड्डू प्रवेश करते हैं और ज़रा दम लेने रुक जाते हैं]

चंदू : (आगे बढ़ नमस्कार करते हुए) आज इस भरी दुपहरी

में कहां दौड़े जा रहे मोहतवर जी ?

मोहतवर : (थकी सी आवाज़ में) बात ही मत पूछो भैया। हमारे राजा साहब हैं बड़े धार्मिक विचारों के आदमी। कल संक्रान्ति के दिन कुछ सोना, चांदी, कपड़े और बहुत सारा अनाज इत्यादि दान किया था सो कहने लगे तुम खुद जा कर हमारे कुल पुरोहित जी के घर पहुँचा आओ।

बूढा : (चंदू से) क्या कह रहे हैं चंदू भैया ! यह मोहतवर साहिब ?

चंदू : कहते हैं कि कल राजा साहब ने सोना, चांदी, अन्न वस्त्र आदि बहुत कुछ दान किया है सो इन्हें कुल-पुरोहित रणपत के घर पहुंचाने को भेजा है।

बूढा : (सोचते हुए) राजा साहब ? कौन है यह राजा साहिब ?

फिड्डू : (आगे बढ़ कर) यही मीयां, बांगी हमारे मालिक ! आज कल राजा साहब कहलाते हैं।

बूढा : (हैरानी से) बांगी ? राजा ?

मोहतवर : हां ! अब उन को राजा साहब की पदवी मिलने ही वाली है।

बूढा : तुम लोग बनाने में लगे हो तो कुछ न कुछ बना कर दम लो गे।

मोहतवर : (चलते हुए) अच्छा आज्ञा दीजिये हमें बहुत देर हो गई। वापिस भी पहुंचना है !

(मोहतवर फिड्डू और भीमा चले जाते हैं)

बूढा : (कुछ देर चुप रह कर) देखा चंदू ? इस तरह बिकते है धर्म और न्याय !

चंदू : अच्छा ?

बूढा : (जाते जाते) अच्छा नहीं तो क्या ?

[बूढे का गुस्से में चले जाना, उस के पीछे चंदू का भी निकल जाना ।]

OOO

पाँचवा दृश्य

(रणपत के घर का ठाकुर द्वारा, रणपत का चौधरी के साथ ह
करते एक तरफ से प्रवेश, चौधरी के कपड़े अस्तव्यस्त और दाढ़ी बढ़ी
है]

रणपत : कुछ भी हो चौधरी जी ! आप को सबूत और गवा
तो प्रस्तुत करने ही पड़े गे ।

चौधरी : (सकरूण अवाज में) इस गांव में कौन नहीं जान
कि मैं बांगी के साथ आधे का भागीदार हूँ । पर उ
पापी के डर से, कोई भी मेरी तरफ से गवाह ब
को तैय्यार नहीं । तीन दिन से दर दर की खाक छ
रहा हूँ । अब आप ही मेरे सरपच और आप
सबूत हैं।

रणपत : जब तक चार भले लोग हिम्मत करके पंचायत
सामने सच्चाई न बताएं, मैं क्या कर सकता हूँ
पंचायत क्या कर सकती है ? आप का फरीक
कहता है कि चौधरी का हमारे साथ कोई दूर प
का सम्बन्ध रिश्ता नहीं है ।

चौधरी : अच्छा, वह शख्स अब हमें अपना बिरादरी भाई मानने से भी इन्कार करता है? एक अटल सत्य को झूठ के तले दबाना चाहता है! (अफसोस से) कागज पत्र कोई लिखित सबूत होगा भी तो वह उस बैरी ने पहले अपने कबजे में कर लिया है। मेरे पास तो अपने आप के सिवा न कोई सबूत है न गवाही।

रणपत : बात यह है चौधरी जी कि पंचायत सब कुछ जानते हुए भी कुछ नहीं कर सकती जब तक कि पक्के प्रमाण और सच्चे गवाह उस के सामने सत्य का समर्थण न करें।

चौधरी : (निराश हो कर) अच्छा! तब मेरा दुर्भाग्य ही समझो! मुझ जैसे बे-सहारा आदमी के लिये भगवान के घर में न्याय नहीं! मुझ गरीब के पक्ष में कौन देगा गवाही उस जालम के खिलाफ? जिस के लिये तिनका तोड़ना और आदमी का वध करना एक समान हैं। (आंसू पोंछ कर) अच्छा चलता हूँ! क्षमा कीजिये!

[चौधरी का चले जाना और रणपत का परेशानी में इधर उधर चक्कर काटना, कुछ देर में शुक्रा का प्रवेश करना]

शुक्रा : (पति को परेशान देख कर) आप बहुत चिंतित मालूम होते हैं। कल भी आप ने कुछ खाया पिया नहीं आज भी भोजन की थाली वैसे ही पड़ी है। आखर बात क्या है?

रणपत : बात बहुत चिन्ता की है शुक्रा! चाड़कों के झगड़े में

मेरे सरपंच बनने की बात दूर दूर तक फैल चुकी है, सब लोगों की दृष्टि मुझ पर लगी है। इस गांव के सब लोग यह जानते हुए भी, कि चौधरी सच्चा है, कोई भला मानुस पंचायत के समक्ष गवाही देने को त्यार नहीं।

शुक्रा : (चिंतित स्वर में) तो फिर ?

रणपत : जुल्म का आतंक और मृत्यु का भय इन लोगों पर इतना हावी हो गया है कि दूसरा आदमी मेरे पंच बन कर बैठने को त्यार नहीं। अब मैं ही पंच और मैं ही सरपंच हूँ।

शुक्रा : तब क्या होगा ?

रणपत : हमारा तो खैर जो होना होगा, वही होगा ! परन्तु मुझे दया आती है इन लोगों की हालत पर। यह— डुग्गर की धरती, जहां के वासी सच्चाई की खातिर यमराज से भी लोहा लेने को त्यार हो जाते थे; आज किसी में सत्य को सत्य कहने तक की हिम्मत शेष नहीं रही। क्या होगा इस देश का ? क्या होगा इन लोगों का ?

शुक्रा : (उत्तेजित हो कर) क्या हुआ अगर सभी कायर बन बैठे हैं ? आप वही करें जो सत्य है, जो न्याय है।

ररणपत : तुम नहीं समझती शुक्रा ! न्याय तो युक्तियों और प्रमाणों से पुष्ट उस सच्चाई का नाम है जो झूठ का मुंह बन्द कर डाले। ऐसा प्रकाश जिसके सामने अंधेरा टिक ही न सके।

[इसी अंदर की ओर से रणपत को पुकारती उन की, वृद्ध माता का प्रवेश]

मां : (प्रवेश करते ही शुक्रा को देख) बहू कहां गया यह लड़का ? क्यों ना खाया उस ने खाना ? (शुक्रा मां के पैर छूती है और रणपत को देख कर) क्या बात है ? क्यों ऐसी सूरत बना रखी है ? मुझ से दुराव ? मैं सब सुन चुकी हूं। बड़ा न्यायकारी बना बैठा है ? क्यों पड़े तुम उन चाड़कों के झमेले में ? कल का बच्चा ! तुम्हारा क्या वासता है इन बातों से ?

रणपत : पर मां......

मां : (टोकते हुए) बस बस रहने दे अपनी सफाई। वह बांगी राक्षस ! जो राह चलतों की हत्या करता है। पाप पुण्य जिस के लिये कोई बात ही नहीं ! वह मानेगा तेरा फैसला और तू करेगा उसका न्याय ! जिस राजकचहरियों तक की परवाह नहीं की !

रणपत : परन्तु मां किसी न किसी को तो इन अत्याचारों का सामना करना ही होगा। नहीं तो धर्म सत्य का न्याय सब मिट जाएंगें, संसार में मनुष्यों का रहना दूभर हो जाएगा।

मां : धर्म और न्याय की रक्षा करेंगे वही भगवान, जो आज तक करते आये है। तेरे पास कौन सी शक्ति है उस– दुर्योधन को मार्ग पर लाने के लिये ?

रणपत : मगर मां दुर्योधन को मार्ग दर्शाने के लिये भी तो भगवान ने अर्जन के मन ही प्रेरणा भरी थी। बीत

का ज्ञान तो यही कहता है कि अत्याचारों को सहने की अपेक्षा उन से लड़ कर मर जाना भी परम श्रेष्ठ है।

मां : बस बस, रहने दे तू अपना यह ज्ञान ! अत्याचारों का दमन कर के नियम और न्याय की स्थापना करना राजा का काम है हमारा नहीं। अपने अपने कर्तव्यों का पालन करना ही सच्चा धर्म है। यह तो गीता का ही ज्ञान है। इसे तू क्यों भूलता है ?

रणपत : तब तो तुम्हारा कहना यह हुआ कि हम ब्राह्मणों का काम केवल थोथे उपदेश देना है उन पर अमल करना नहीं ! यह तो वही बात ठहरी पंडित वेद मुतालची तीनों चतुर कहायें, औरों को दे चांदिनी आप अंधेरे मांय।

मां : (खीझ कर) तुम्हें बातों में कौन पछाड़ेगा ! मगर हमें अपने यजमानों के झगड़ों में उलझने की आवश्यकता ही क्या है। हमारे लिये तो दोनों पक्ष समान हैं। दोनों को धर्म मार्ग सुझाना हमारा काम है। मानना ना मानना उनका ! जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।

रणपत : यह भी तो कही अपना आप बचाने वाली बात हुई मां, हमारा कर्तव्य केवल दूसरों को उपदेश दे कर दान दक्षणा प्राप्त करना ता है, परन्तु उस पर स्वयं चल कर आदर्श उपस्थित करना भी तो हमारा ही धर्म है। नहीं तो हमारे उपदेश तो ढोंगी का प्रलाप मात्र कहाएं गे।

मां : (घबरा कर) पर बेटा, सब कुछ देखते समझते हुए भी मैं कैसे तुम्हें इस जलती आग में हाथ डालने

को कह दूं ! मेरा भी तो मां का कलेजा है ?

रणपत : मां ! आज तुम मुझे यही आर्शीवाद दो कि इस जलती आग में तपे शुद्ध सोने के समान बाहिर आ जाऊं !

मां : नहीं, नहीं, नहीं ! कैसा हठी लड़का है ? (शुक्रा से) बहु तू ही समझा इसे । बांगी के मामले में दखल देना सांप के बिल में हाथ डालना है !

(शुक्र और मां दोनों आसूं पूंछती हैं। बाहर आदमियों के पुकारने की आवजें आती है) अवाज़ें पुरोहित जी ! गुरुमहाराज ?

रणपत : कौन है । आईये अंदर आ जाईये !

(शुक्रा और दोनों अंदर की तरफ चली जाती है और दूसरी तरफ से फिड्डू और भीमा के साथ मोहतवर प्रवेश करता है)

मोहतवर : (दरवाजे पर जूता उतारते हुए हाथ जोड़ कर) चरणवंदना ! चरणवंदना ! श्री मान जी ।

रणपत : (स्वागत सा करते हुए) आईये, आईये, मोहतवर जी इधर आसन ग्रहन कीजिये । धन्य भाग्य

पिड्डू : (सामने हो कर) पाय लागन ! पाय लागन ! देवता धन्य भाग हमारे समझो जिन को आप जैसे कुलीन विद्यवान और धार्मिक ब्राहमणों के दर्शनों का शुभ संयोग प्राप्त हुआ ।

मोहतवर : हां जी बड़े ऊंचे भाग से ही आप जैसे सर्वगुण सम्पन्न ब्राह्मण देवता के दर्शन हो है । हमारे राज साहब तो

यही कहते हैं कि हमारे कुल पुरोहित तेजस्वी और तपस्वी याज्ञात धर्म का अवतार हैं।

रणपत : कहिये ! वीर बांगी जी तो प्रसन्न है ? उन का परिवार तो सुखी है ? आप खुश हैं ?

माहतवर : आप जैसे देवता स्वरूप पुरोहितों का आर्शीवाद सा हो तो दुख किस बात का ? अपने अपने स्थान पर सब राजी खुशी हैं महाराजा।

फिड्डू : (वहंगी उठाये खड़े हुए भीमे से) बैठ जा भाई भीमे भी ! खामखाह बोझ उठाये क्यो खड़ा है।

रणपत : (अफसोस सा करते हुए) ओ..... हो मैंने देखा नहीं क्षमा करना ! आसन ले कर बैठ जा। (फि से) तुम्हारी घर वाली तो प्रसन्न है फिड्डू राम जी !

फिड्डू : (हैरानी सी जताते हुए) घर से चला तो "बोली पुरोहित जी अवश्य ही मेरा हाल पूछ गे" और यहां आ कर वही बात निकली (बार बार कान छू कर) मान लिया ! मान लिया ! तू भी कोई चमत्कारी नारी है ! (माथ नमा कर) एक बार फिर पायलागन कबूल हो माईबाप ! उस ने कहा था कि मेरी तरफ पुरोहित श्री को अवश्य पा लागन कहना। अच्छी याद दिलाई नहीं तो आज चैन नहीं थी।

रणपत : (मुस्कराते हुए) सुनाईये कलीधर जी आज कैसे आने का कष्ट किया ?

मोहतवर : राम राम राम ! गुरु पुरोहितों की हाजरी बजाने का कष्ट भगवान सब के दे। तभी तो राजा साहब कहते

हैं कि इस सारे देश हमारे पुरोहित जी के समान धार्मिक और विद्वान एक ब्राह्मण नहीं है। उन का ध्यान भी तो हमेशा धर्म कर्म की तरफ रहता है।

फिट्टू : आ......हा : ! राजा साहिब के क्या कहने। मैं कहता हूं वे तो है ही कोई देवता अवत्तार। उन विचार तो हर समय धर्म कर्म के कामों में ही लगा रहता है। सोने के कंगन, चांदी के बर्तन, रेशमी पोशाक, फर्द जिनसे आदि मिला कर हजार रुपें मूल्य की चीजें होंगी !

रणपत : श्रीमान जी। यह तो उन्हों नाहक कष्ट उठाया।

मोहतवर : राम, राम, राम ! कष्ट की बात नहीं यह उन की श्रद्धा के पुष्प पत्र हैं ! कहते थे पुरोहित जी के चरण छू कर कहना कि सेवक पर कृपा दृष्टि ही रक्खें !

रणपत : कृपा दृष्टि तो परम परमेश्वर की चाहिये। परन्तु यह चीज़ें हम ग्रहण नहीं कर सकते। आप इसी तरह वापस ले जाइये और उन से निवेदन कर दीजिये कि इस घर में सब कुछ उन्हीं का दिया हुआ है।

मोहतवर : नां ! नां महानुभाव ऐसी बात मत कहिये। आप ठहरे उनके पुरोहित और वे रहे आप के यजमान। वे हजार बार देंगे और आप लेंगे। शायद आप ही के आर्शीवाद से उन के राजा बनने की बात आगे बढ़ रही है।

रणपत : (दृढ़ता से) देखिये मोहतवर जी। मैं बांगी जी का

पुरोहित जरूर हूँ, परन्तु इस समय नहीं। इस समय तो मैं केवल उन के झगड़े का सरपंच हूँ। जब तक इस झगड़े का निर्णय नही हो जाता उन के घर का एक दाना भी स्वीकार करना मेरे लिये ज़हर के समान है। आप यह सब कुछ ले जाईये और उन से कहिये कि इन चीजों को गरीब लोगों में बांट दें!

फिड्डु : घर आई लक्ष्मी का निरादर करना उचित नहीं श्रीमान! आप बहुत विद्वान् है परन्तु उमर का अनुभव जरा कम है। यह हजार रुपये से भी अधिक मूल्य की चीजें क्यों गंवाते है। फिर बांगी जैसे शक्तिशाली का विरोध लेने में क्या फायदा? मैं तो अरज करता हूं कि आप इस झमेले में पड़िये ही मत।

मोहतवर : आप नाहक ही इस झमेले में आ फंसे पडित जी! आप कोइन झगड़ों से क्या लेना देना? अपना भगवान भजन करते रहिये।

रणपत : आप ठीक कहते हैं। परन्तु अब जब कि उन दोनों फरीकों लिख लिखा कर मुझे अपमा सरपंच स्वीकार कर ही लिया है तो एक सच्चे सरपंच स्वीकार कर ही लिया है तो एक सच्चे सरपंच की तरह न्याय करना ही मेरा धर्म है।

फिड्डू : देखिये महाराज! छोटा मुंह बड़ी बात होगी, आप राजा साहब के क्रूर स्वभाव को तो जानते ही हैं। क्या जाने इसी धर्म संगत बात के लिये आप की जान के दुसम बन बैठें। देखिये उस लिखित को! करवा

ले अपना फैसला राज कचहरी में !

रणपत : (क्रोध में) यह नहीं हो सकता फिड्डू ! धन के लोभ और मृत्यु के भय से मैं अपना धर्म नहीं त्याग सकता ! बस यह सभी चीजें आप वापस ले जाइये ।

फिड्डू : शिव, शिव, शिव ! कौन पैदा हुआ इस संसार में आप को मृत्यु का भय और धन का लोभ दिखाने वाला मैंने तो लोक व्योहार की सारण सी बात कह दी खफा मत होइये देवता इस में हमारी अपनी रोजी रोटी का भी मामला है ।

मोहतवर : फिड्डू सच कहता है श्रीमान ! यह संगोग भी रोज-रोज नहीं मिलते । अगर आम चाहें तो कुछ आर भी पट सकता है !

रणपत : (अत्यत क्रोध में) यह नहीं हो सकता, नहीं हो सकता कलगीधर ! घर आये लोगों से मैं कुछ कटु वचन कहना नहीं चाहता था । परन्तु अब जब आप लोग इन नीच बातों पर उतर आये हैं तो सुनिये आप जैसे स्वार्थी और चापलूस लोग ही यह आग भड़काने वाले हैं ! (संयत स्वर मे) मुझे समझाना छोड़ कर पहिले आप लोक अपनी काली करतुतों को देखिये ।

मोहतवर : मगर पुरोहित जी ... —

रणपत : बस कृपा कर के चुप रहिये । आप लोगों की हालत उन चीलों और गिद्धों से भी गई बीती है जो सदा मरे मुर्दों का मांस खाते हैं ।

फिड्डू : मगर सुनियें तो माई बाप ...

रणपत : मैं सब कुछ सुन समझ चुका आप इन चीजों को उठा कर मेरी नजरों से दूर हो जाइये ! बड़ी कृपा होगी।

[मोहतवर, फिड्डू और भीमा शरमिंदा सा हो कर एक, एक करके चले जाते हैं और क्रोध में जलते रणपत भगवान के सिंहासन की तरफ मुड़ कर]

रणपत : हे भगवान कैसे दुष्ट लोगों से वासता पड़ गया है लाज, शरम, इनसानियत कुछ भी तो नहीं है इन में !

[इसी समय शुक्रा के साथ मां का प्रवेश]

मां : क्यों रणू ! कैसे आया था यह वांगी का मोहतवर ? क्या कह रहा था ?

रणपत : इन पापी लोगों का भी कुछ ठिकाना है मां। बांगी की तरफ से सोने के गहने, चांदी के वर्तन, फर्द पोशाक पता नहीं क्या क्या रिशवत देने आया था ताकि मैं इस मामले में सरपंच बनने से ही इनकार कर दूं। बात बनती न देखी तो कहने लगे वांगी राजा बन कर हमें कष्ठ पहुंचाये गा। इस पर भी काम ना बना तो बातों बातों में मौत की धमकी तक देने लगे।

माता : (क्रुध स्वर में) अच्छा ! इन दुष्टों की यह मजाल ! धन के लोभ और मृत्यु के भय से हमारा धर्म खरीदना चाहते हैं। पर बेटा अगर तू ने इस मां का दूध पिया है अगर तेरी रगों में अपने पूर्वजों का खून है तो इस झगड़े का फैसला करके ही दम लेना ! दूध का दूध

और पानी का पानी करके दिखा देना ।

रणपत : (गद् गद् स्वर में) मां ! मेरी प्यारी मां ! मेरी धर्मी मां ! मुझे तुम से यही आशा थी । तुम्हारे इस आर्शीवाद से मुझे इतना बल और हौसला प्रदान कर दिया है कि अब मैं सत्य और न्याय की खातिर हर कठिनाई को झेल सकता हूँ । (मां के पैर छूता है)

माता : (रणपत को ऊपर उठाते हुए आखें पोंछ कर) तुम सच कहते थे बेटा । इस समय सत्य और न्याय की रक्षा करना ही तुम्हारा कर्तव्य है । (सुबकती हुई शुक्ला का सिर छू कर) हिम्मत से काम ले बेटी ! तेरा सौभाग्य अटल है तो तेरा कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता । चल रणू के लिये खाना परोस दे !

[सब जाते है]

OCO

छटा दृश्य

[समय दोपहर वाद, तालाब किनारे के वटवृक्ष के नीचे पंचायत जुट रही है चौधरी और कुछ गरीब किसान एक तरफ़ चटाई पर बैठे हैं। दूसरी तरफ बांगी को मोहतवर, फिड्डू और भीमा, फीना बैठे हैं। बांगी स्वयं एक सिंहासन पर बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा है मीयां चोहलो चौधरी के पक्ष में बैठा बांगी की हरकतों पर मुस्करा रहा है। सामने एक बड़े तख्तपोश पर चादर बिछी है सामने चौकी और कलम दवात आदि पड़े है। इसी समय गांव का चौकीदार आ कर सब को सचेत करता है।]

चौकीदार : सब सज्जन सुनें ! सरपंच जी पधार रहें हैं।

[सभा में चुप्पी छा जाती है युवक सरपंच प्रवेश कर के मुस्कराते हुए तख्तपोश के पास आ खड़े होते हैं। उनके आदर में बांगी के सिवा बाकी सब खड़े हो जाते हैं। रणपत सब को बैठने का संकेत करते हुए स्वयं तख्तपोश पर बैठते हैं।]

रणपत : (कुछ देर चुप रह कर) क्या सब लोगों को पंचायत

की सूचना मिल चुकी है ?

चौकीदार : (हाथ जोड़ कर) हां श्रीमान दराहली तथा वीरपुर के दोनों गावों में घर घर सूचना दे दी गई है।

रणपत : तब सभी लोग क्यों नहीं आये ?

चंदू : (खड़ा होकर) पंचायत की आज्ञा हो तो एक अरज करूं ?

रणपत : हां आज्ञा है। आप निभय हो कर कहें !

चंदू : पंचायत की सूचना के साथ घर घर में यह अफवाह भी फैलाई गेई है कि आज पंचायत के स्थान पर तलवारें चल जाएगी। इस लिये बहुत से लोग रास्ते से ही वापस लौट गये हैं।

सब लोग : चदू ठीक कहता है ! ठीक कहता है !

बांगी : झूठ! यह सरासर झूठ है !

चोहलो : (उठ कर) मैं बोलने को आज्ञा चाहता हूँ।

रणपत : आप कहिये।

चोहलो : यह पंचायत का दरवार है। यहां गांव वाले एक समान हैं। इस लिये बांगी जी से कहा जाए कि वे भी सब के साथ नीचे आ कर बैठे और गांव पंचायत के की आज्ञा ले कहें। यह हुक्का और सिंहासन यहां से उठवा दिये जाएं।

बांगी : (भड़क कर) मार लाठी ! यह सिंहासन और हुक्का

हम अपने घर से लाये हैं किसी दूसरे का नहीं है।

[लोगों में हल चल, चोहलो के समर्थन में आवाज़ें। ठीक है ! बांगी नीचे बैठे ! पंचायत में सब बराबर हैं]

रणपत : (शान्त और गम्भीर स्वर में) सज्जनों पंचायत की यह पवित्र परंपरा इस देश में हजारों वर्षों से मान्यता पा रही है। पंचायत सारे समाज की मुख्य है। इसके नियमों का अपमान करना सारे समाज का अपमान करना है। इस लिये हम आज्ञा करते हैं कि बांगी भी सब लोगों के समान नीचे बैठे। हुक्का और सिंहासन उठवा दिये जाएं !

[बांगी शर्मिंदा सा बड़बड़ाता हुआ नीचे बैठ जाता है भीमा फीना वगैर हुक्का और सिंहासन उठा देते हैं]

रणपत : सज्जनों ! असल में पंचायत आप ही लोग हैं। मैं केवल इस सभा का सरपंच हूँ। सत्य और न्याय की पुष्टि के लिये प्रणाम, युक्तियां और साक्षी प्रस्तुत करना आप का काम है। जो लोग मौत के भय से यहां नहीं आये हमें उन के लिये अफसोस है। इसी तरह के कायर लोग अन्याय और अत्याचार को बढ़ाने का कारण बनते हैं।

चंदू : (उठ कर) सभा जनो ! आम लोगों को डरा धमका कर एक सोचे बचार ढंग से पंचायत से दूर रखने के यत्न किये गये हैं। मैंने खुद अपने कानों से सुना है कि इस फिड्डू की बीबी हमारे घर की औरतों में इसी प्रकार अफवाहें फैला रही थी।

फिड्डू : (खड़ा हो कर कान छूते हुए) राम, राम, राम ! वह बहुत भली नाइन है श्रीमान जी ! वह भला क्यों फैलाने लगी ऐसी अफवाहें। मगर उस ने भी भोलेपन में कोई सुनी सुनाई बात कह दी हो वो कह नह सकता !

मोहतवर : ऐसी बातें हम ने नहीं हमारे किसी दुश्मन वैरी ने फैलाई होंगी।

रणपत : मोहतवर जी ! आप तो व्यर्थ ही सफाई पेश करने लगे। अफवाहें किसी ने भी फैलाई हों। एक बात स्पष्ट है कि जिस पक्ष ने भी यह हरकत की वह अवश्य ही सच्चाई में कमजोर है और इस तरह जोर जबरदस्ती की बातें कह सारे समाज के सामने आने से कतरा रहा है।

लोगों में से आवाजें : हां ठीक है ! चोर की दाढ़ी में तिनका ! असल कमजोरी स्पष्ट है !

रणपत : (शांत रहने का इशारा करते हुए) अब यहां उपस्थित आप सब भाईयों का कर्तव्य है कि निर्भय हो कर सत्य और न्याय की खोज करें। इस लिये इन बातों को यहीं समाप्त करते हुए पंचायत की असल कार्यवाही आरम्भ की जाती है।

आवाजें : ठीक है ! सत्य बचन ! असल कारवाई शुरू कीजिए !

रणपत : आप सभी जानते हैं वीरपुर वाले चौधरी और दरहाली गांग के बांगी चाड़क के दरमियान जमीन

के बटवारे का झगड़ा बड़ी मुद्दत से चलता आ रहा है।

चंदू : हां श्रीमान झगड़े के कारण दोनों पड़ोसी ग्रामों के लोगों की बरबादी हो रही है।

रणपत : इस लिये आप भाई सारी बात दोनों फरीकों की अपनी जुबानी सुनें ! जो कुछ आप जानते हों वह भी बतायें और न्याय करने में पंचायत की सहायता करें। सब से पहले हम दावेदार वीरपुर वाले चौधरी जी से कहते हैं कि वह ईश्वर भगवान को समक्ष मानते हुए सौंगध उठायें, और पंचायत के सामने सच्च सच्च अपना पक्ष पेश करें।

[बढ़ दाढ़ी और फटे किन्तु साफ कपड़े पहने चौधरी खड़े हो कर सकरुण दृष्टि से चुप चाप सब की ओर देखता है और दर्द भरी आवाज़ में बोलने लगता है]

चौधरी : पंचो ! मैं ईश्वर को हाजर नाज़र जानते हुए कसम खा कर कहता हू कि आप के सामने सच सच बात अरज करूंगा ! (चुप्प हो जाता है)

रणपत : कहिये ! पंचायत सुनती है।

चौधरी : पंचायत परमेश्वर का दरबार है। इस सभा का हर आदमी जानता है कि मेरे और बांगी के दादा सौतेले भाई थे। हमारा परदादा "बीरा राठो" एक पराक्रमी पुरुष थे। उन्होंने जीवन भर जगल और बंजर काट कर एक हजार बीघा उपजाऊ भूमी तैय्यार की थी। उन्ह ने दो विवाह किये थे परन्तु

हमारी दोनों परदादियों की आपस में नहीं बनती थी। इस लिये वीरपुर और दराहली में दो गृहस्थियां कायम हुई। दोनों की औलाद 'धर्मा और 'वरीता' दो बेटे थे। मेरे दादा का नाम धर्मा और बांगी के दादा का नाम वरीता था। दो गृहस्तियां होने पर भी उन की जमीन जायदाद एक ही वनी रही। हमारे परदादा जी के देहान्त के उपरान्त पंचायती ढग से जमीन का वटवारा तो हुआ, परन्तु भाईयों में आपसी प्यार रहने के कारण काम काज इकट्ठे ही चलते रहे उन दोनों के आगे गणेशा और मखन दो बेटे हुए। आंसू पूंछते हुए चुप हो आना)

रणपत : (चौधरी को चुप देख कर) चौधरी जी आप कहते जाए पंचायत सुन रही है

चौधरी : मेरे बापू जी का नाम गणेशा था। हमार पिता हमें छोटे - छोटे छोड़ कर ही स्वर्ग सिधार गये तब हमारा पालन पोषण हमारे धर्मावतार चाचा अर्थात बांगी के पिता जी ने किया। यह बांगी तब छोटा सा था मैंने इसे अपनी गोद में खिलाया है। (क्रोध आ जाता है) मगर इस कुलघातक पापी ने मेरे जवान भाईयों और बेटों को एक एक करके छल - बल द्वारा मार डाला।

[रूक कर आंसू साफ करना]

रणपत : (गम्भीरता से) चौधरी ! तुम पंचायत के सामने ब्यान दे रहे हो। यहां किसी एक को दूसरे के प्रति अपशब्द कहने की आज्ञा नहीं है। इस अपराध के लिये, सारी सभा से क्षमा याचना करने पर ही तुम्हारी

बात आगे सुनी जाएगी !

चौधरी : (सब के सामने हाथ बांधते हुए) पचो और भाईयों ! मैं बहुत ही दुखी और सताया गया आदमी हूं। मेरी सुध-बुध ठिकाने नही रही। मेरे मुंह से पंचायत के सामने जो अनुचित बात निकल गई हो उसके लिये क्षमा याचना करता हू।

रणपत : (सभा से) सज्जनो ! चौधरी ने अपनी गलती स्वीकारते हुए आप से क्षमा मांग ली है। अत: व्यान जारी रखा जाए।

चौधरी : हमारे स्वर्गवासी चाचा जी को स्वर्ग सिधारे चालीस वर्ष हो गये है तब यह चोहओ एक महीने का था। उन्ही दिनों से इस बांगी ने हमे हमारी पुश्तैनी जमीन में नहीं घुसने दिया। तीन चार विधवाएं और आठ दस छोटे बच्चे खाने वाले हैं। आज हम लोग दाने दाने के मोहताज हैं।

[रुलाई आने से रूक जाना और सब लोगों का आंसू पूंछना]

चौधरी : (व्यान जारी रखते हुए) इन छोढ़े छोटे बच्चों और अवलाओ को छोड़ कर मैं दूर पार जा नहीं सकता ! इस बांगी के भय से यहां कोई मुझे मजदूरी पर भी नहीं लगाता ! भीख मांगना मेरा धम नहीं और मौत मांगे मिलती नहीं ! मेरे जवान भाईयों और बेटों को किस प्रकार छल-बल से मार डाला गया यह सभी लोग जानते है। अदालत कचहरियों में

मुझे धक्के मिलते हैं

[गला रूंध जाने से कुछ देर चुप रहना सभा में सन्नाटा, कुछ लोगों का आंसू पूंछना]

रणपत : चौधरी ! आपको और जो कुछ कहना हो कहें !

चौधरी : मेरी पंचायत से यही प्रार्थना है कि मुझे मेरा न्याय संगत हक दिलवाया जाए ।

[देर तक हाथ बांध सभा में चारों ओर देखना और बैठ जाना]

रणपत : (बांगी की ओर देख कर) अब पंचायत "बांगी" जी को अपना पक्ष पेश करने के लिये कहती है !

[सभी लोग बांगी की तरफ देखने लगते हैं। वह घबराया सा बैठा रहता है मोहतवर और फिड्डू फुसफसाते है और आखिर में मोहतवर खड़ा हो जाता है]

मोहतवर : श्रीमान जी हमारा पक्ष बहुत सीधा और स्पष्ट है ।

चोहलो : पंचायत से मेरी प्रार्थना है कि बांगी जी को भरी बरादरी में स्वयं अपना ब्यान देने के लिये कहा जाए । यह कलगीधर कौन होता है उनकी जगह बोलने वाला ?

मोहतवर : मैं राजा साहब का मोहतवर हूं, और उनके हुकम से उनके स्थान पर बोल रहा हूं ।

मोहलो : पंचायत के सामने कोई राजा राणा नहीं! वे भरी बैठदिरी में सब के सामने सौगंध उठा स्वयं अपना पक्ष पेश करें।

[लोगों में हलचल सी]

रणपत : मोहतवर जी आप बैठ जाइये! पंचायत बांगी जी के मुंह से ही उनका पक्ष सुनना चाहती है!

[मोहतवर का बैठ जाना। बांगी का घबराये हुए से चारों ओर देखना। फिड्डू की बांह थाम कर बांगी को उठाना और खड़े हुए बांगी का खीझना और बड़बड़ाना]

रणपत : (बांगी की चुप्पी देख कर) बांगी जी! आप राम राम कह कर शपथ ग्रहण करें कि पंचायत के सामने सत्य सत्य बखान करेंगे।

[बांगी शपथ ग्रहण करने में हिचकिचाता है। फिड्डू और मोहतवर उकसाते हैं। लोगों में हंसी की लहर सी दौड़ जाती हैं]

बांगी : (हिम्मत सी करते हुए खिसियानी सी उखड़ी उखड़ी आवाज में) मैं राम राम कह कर—...... (चुप हो जाना)

मोहतवर : (फुसफुसाते हुए) कसम खाता हूँ?

बांगी : (खीझ में) कसम खाता हूँ कि सच सच ब्यान दूंगा मार ला——।

[फिड्डू एक फटा सा कागज़ निकाल कर बांगी के हाथ में थमाता है]

बांगी : (कागज़ खोल कर बांचते हुए) मेरे दादा का नाम बरीता और बापू का नाम मखन था। इस चौधरी की सारी बात झूठी है। मेरे परदादा के घर जब कोई संतान नहीं हुई तब उसने दूसरा विवाह किया था। जिस में से एक ही बेटा बरीता नाम का हुआ। धर्मा नाम का एक अनाथ सा बालक दया कर के पाल रक्खा था उसकी शादी ब्याह भी करवाया था। यह चौधरी उसी की औलाद में से है। जिस धर्मा को यतीम जान कर पाला-पोसा उस की यह भैया .. चौधरी भला कैसे हमारी जायदाद का भागीदार हो सकता है ? न यह हमारे कुल का है न हमारा हिस्सेदार। (बांगी का बैठना)

रणपत : (लोगों को चुप रहने का संकेत करते हुए) सभासदो ! आप ने दोनों फरीकों की मूल बातें सुन ली हैं। अब पंचायत दोनों पक्षों को अपने अपने पक्ष की पुष्टि के लिये प्रमाण और गवाहियां प्रस्तुत करने की आज्ञा देती है। सब से पहले चौधरी जी को कहा जाता है कि वे अपने आप को भागीदार साबित करने के लिये प्रमाण और साक्षी पेश करें।

चौधरी : (हाथ बांधे चारों ओर नजरें घुमाते हुए) सरपंच जी ! जो बात चंद्रमा और सूर्य की तरह प्रतक्ष है। जिसे इस गांव का हर प्राणी अपने आप की तरह जानता है उसके सबूत और गवाहियां क्या पेश करूं। यह सारी सभा मेरी गवाह है इन्ही से पूछ लिया जाये।

रणपत : पंचो ! चौधरी का कहना है कि आप सभी लोग उन

के पक्ष की सच्चाई के गवाह हैं। आप में से जो कोई भी इस बारे में कुछ जानता हो बारी बारी से पंचायत के सामने ब्यान करें।

[सब का चुप-चाप एक दूसरे का मुंह ताकते रहना]

रणपत : (चुप्पी देख कर) सज्जनों! पंचायत दूसरी बार आप सब से कहती है कि आप में से जो कोई भी इस बारे में जानता हो निर्भय होकर पंचायत के सामने बखान करें।

[सभा भर में गम्भीर चुप्पी]

रणपत : (कुछ क्षण इन्तज़ार के बाद) इस सभा को तीसरी बार समय दिया जाता है कि आप में से जो सज्जन भी इस बारे मे जानता हो पंचायत को बता देवे। नहीं तो यही समझा जाएगा कि चौधरी अपने दावे के पक्ष में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके और बांगी का कथन ही सच है।

[सभी लोग कहना चाह कर भी कुछ नहीं कहते]

रणपत : (चुप्पी देख कर) अच्छा......तब......

चोहलो : (खड़े हो कर) मैं अपनी गवाही देना चाहता हूँ।

रणपत : आप शपथ ग्रहन करें।

चोहलो : मैं परमात्मा को हाजर नाजर जानते हुए सौंगध करता हूँ कि पंचायत के आगे अपनी जानकारी में सच्च

सच्च ब्यान करूंगा।

चोहलो : पंचो! मैं बांगी जी का छोटा भाई इस बात की गबाही देता हूँ कि चौधरी हमारा सगा सम्बन्धी है और हमारे साथ आधे का भागीदार है।

[लोगों में उत्साह और हलचल]

कलगीधर : (खड़े हो कर) मेरा भी पंचायत के आगे एक सबाल है।

रणपत : हां पूछ सकते हैं।

कलगीधर : मीयां चोहलो जी से पूछा जाए कि उनकी आयु क्या है? और जब इन के पिता की मृत्यु हुई तो वह कितनी उमर के थे?

चोहलो : मेरी आयु इस समय चालीस वर्ष के लगभग है और मैंने सुना है मेरा जन्म मेरे पिता जी की मृत्यु के एक मास बाद हुआ था।

कलगीधर : पंचों! इन का जन्म पिता की मृत्यु के मास बाद में हुआ, तब इन को इस पुराने झगड़े का क्या पता हो सकता है और गवाही भी कैसे प्रमाणित मानी जा सकती है?

[बांगी के पक्ष में प्रसन्नता और हलचल]

रणपत : सज्जनों आप ने चौधरी के पक्ष में मीयां चोहलों की गवाही सुन ली वे स्वयं इस झगड़े की जमीन के एक

भागीदार हैं।

आवाज़ : हां.. हां — सुन ली ! सुन ली !

रणपत : और उस पर बांगी के मोहतवर कलगीधर की जिरह भी सुन ली (बांगी से) बांगी जी ! आप को मीयां चोहलो की गवाही के बारे में कुछ कहना है !

[बांगी हिचकिचाता है परन्तु मोहतवर और फिड्डू उसे उसकाते हैं]

बांगी : (खड़े हो कर भी बोल नहीं पाता)

चोहलो : भाई जी ! आप को जो कुछ कहना हो अपने धर्म का बिचार कर कहिये। धर्मराज के दरबार में आपको अकेले ही निबटना होगा। तब यह बहकाने सिखाने बाले मोहतवर और फिड्डू साथ नहीं जाएंगे !

बांगी : (खिसयानी आवाज़ में) हम किसी के बहकावे में नहीं बोलते, अपने मन की सच्ची बात कहते हैं। यह चोहलो चूंकि क्षत्री राजपूत होकर लुहा और बढ़ेई का हीन काम करता है और हम इस को मना करते रहते हैं इसी कारण यह हमारे खिलाफ झूठी गवाही देकर हमें नुकसान पहुँचाना चाहता है। हमें यह गवाही मन्जूर नहीं हैं।

रणपत : चोहलो मीयां आप को भी अपनी बात को सच्चा प्रमाणित करने के सबूत पेश करने होंगे।

चोहलो : मैं बांगी का सगा भाई और झगड़े की जमीन का

एक हिस्सेदार स्वयं स्वीकार करता हूँ कि चौधरी हमारे साथ आधे का भागीदार है।

रणपत : इस का प्रमाण ?

[चोहलो धीरे धीर बैठ जाता है]

रणपत : पंचो ! आप में कोई सज्जन मीयां चोहलो की गवाही का समर्थन करते हो तो उठ कर बताए।

[सब चुप्प रहते हैं]

रणपत : हम आप से फिर पूछते हैं !

[चुप्पी]

रणपत : सभा से तीसरी बार पूछा जाता है कि आप में से जो कोई मीयां चोहलो की गवाही का समर्थन करता है वह उठ कर कहे !

[फिर सन्नाटा]

रणपत : इस का अर्थ यही हुआ कि चौधरी अपने आप को बांगी का भागीदार सिद्ध करने के लिये कोई ठोस तथा सदमान्य प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाये और चोहलो की गवाही पर बांगी को एतराज है........

[इसी समय गाढे की चादर लपेटे घूंघट काढ़े हाथों में एक पुरानी वही थामें रणपत की बूढ़ी माता का प्रवेश]

मां : (प्रवेश करते हीं) ठहरो ! ठहरो ! मैं देती हूं

प्रमाण !

रणपत : (हैरानगी से मां !

मां : (बिना किसी ओर देख) जब इन मर्दों में सब को सच कहने की हिम्मत नहीं तो मैं देती हू प्रमाण ! इन चौधरियों के बाप दादा मेरे देखे हुए थे । पंचायत प्रमाण चाहती है तो यह रहा प्रमाण । (वेही रणपत की तरफ बढाते हुए) इस वेही में इन के दादाओं की अपने हाथों लिखी लिखत माजूद है । मैं चार दिन से इसे ढूंड रही थी अब जा कर हाथ लगी । पंचायत इसे देख कर अपना निर्णय दे । (असमंजस सा अनुभव करते हुऐ) अच्छा मैं चली । (शीघ्रता से चली जाती है)

रणपत : (वेही की लिखत पढ़ते हुऐ सिर ऊपर उठा कर) मां !! (मां को न देख कर) चली गईं ?

[सभा की ओर कुछ देर देखते रह कर]

सज्जनों ! अब पचायत के सामने एक लिखित प्रमाण प्रस्तुत है । इस लेख में आज से अस्सी वर्ष पूर्व की ग्राम पंचायत के सामने धर्मा और बरीता नाम के चाड़कों ने स्वीकार किया है कि हमारी जमीनों के मध्य में स्थित बट वृक्ष के उत्तर की सारी भूमी और वीरपुर के घर मकान धर्मा चौधरी के और बट के दक्षिण की जमीन और दराहलो गांव वाले घर मकान बरीता चाड़क के होंगे । इस वृक्ष की सीध में पूर्व से पछिम तक जमीन के अन्दर कोयले गाड़ कर हदबन्धी पुख्ता कर दी गई है कि बाद में किसी

प्रकार का झगड़ा उपस्थित न हो। लेख पंडित काशी जी के हाथों का है और उस धर्मा बरीता के अलावा हरजस, रामा, विष्णा और दयाला आदि पंचो के हस्ताक्षर हैं।

[लोगों में एक हलचल और प्रसन्नता सी झलकती है बांगी पक्ष के लोग निराश से मालूम पड़ते हैं]

रणपत : आप में से पढ़े लिखे लोग खुद इस लेख को पढ़ सकते हैं।

मोहतवर : श्रीमान ! मैं भी इस लेख को पढ़ना चाहता हूँ।

रणपत : (वही मोहतवर के हाथ में देते हुए) हां पढ़िये।

[मोहतवर वही सरपंच के हाथ मे लेकर बड़े ध्यान से लिखित को पढ़ने और हस्ताक्षरों को पहचानने की कोशिश करता है। फिर शंका में सिर हिला कर वही सरपंच के हवाले कर देता है]

मोहतवर : (वही वापस करके सभा से) लिखित अति सुन्दर है। इस में उन सब लोगों के नाम दरज हैं जिन में से एक भी जीवित नहीं है। स्याही देख कर तो ऐसे प्रतीत होता है जैसे अभी अभी लिखी गई हो।

चाहलो : (क्रोध में उठ कर) रहने दो कलगीधर अपनी यह कुटिल बुद्धि के दाव पेच ! तुम्हारा मतलब यह हुआ कि हमारे पूर्वजा द्वारा लिखी यह लिखित जाली है ? माता आलमा झूठी है ? सरपंच रणपत पक्षपाती हैं ?

मोहतवर : (कुटिल हंसी हंस कर) हमें क्या पड़ी है इसे झूठा

कहने की ! परन्तु सब कुछ देखते सुनते सच भी कैसे मान लें ? (तीखे स्वर में) कहां है वटका वृक्ष इस सारी जमीन में ? हम ने भी कोई कच्चा गोलियां नहीं खेली हैं चोहलो मीयां !

[बांगी के पक्ष में प्रसन्नता और चौधरी के पक्ष में निराशा सी दौड़ जाना]

आवाजें : ठीक है ! बट वृक्ष कहां है ? वृक्ष मिलना चाहिये !

बांगी : (मोहतवर की पीठ ठोंकते हुए) शाबास मोहतवर ! मान गये तुम्हारा कमाल !

रणपत : (सभा को शांत करते हुए) पंजो ! जो शंकाएं उठाई गई हैं, उन को देखते हुए, इस लेख को भी तब तक प्रमाणित नहीं कहा जा सकता जब तक कि इस में लिखे तालाब, वट के वृक्ष और कोयलों की हदबन्धी के प्रतख्य प्रमाण न मिलें । इस लिये इस सभा से फिर प्रार्थना की जाती है कि अगर आप में से किसी सज्जन को उस बट वृक्ष और तालाब के बारे मैं कुछ जानता हो तो पंचायत को बतायें ।

[सब लोग एक दूसरे का मुंह ताकने चुप्प रहते हैं,]

बूढ़ा चाचा : (अचान जोश में आकर) मैं बता सकता हूँ कि वह स्थान । इसी खेत के दूसरे पर कभी एक छोटा सा तालाव और उस के किनारे ग्रने चौंतड़े पर एक वट का वृक्ष था जो कि आज से लगभग पचास वर्ष पहले आंधी से उखड़ गया और गांव के लोगों ने काट छाट कर जला डाला ।

बांगी : (डांटते हुए) अच्छा ?

बूढ़ा : अच्छा नहीं तो क्या ? उस स्थान पर चौरस खेत को अब भी ताल बाला खेत और चौतरें को बट का डंगा कहा जाता है। हम छोटे छोटे थे तो इसी तालाब को बन्ने बाला ताल कहा जाता था।

चंदू : अच्छा ?

बूढ़ा : अच्छा नहीं तो क्या ? अगर उस स्थान को खोजा जाये तो मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि हदवन्दी के कोयलों के निशान मिल जाएंगे।

लोगों में से आवाजें : ठीक है ! अवश्य ही वही जगह होगी ! उसे खोदा जाए ?

चोहलो : यह अवश्य ही वही स्थान होगा जिस का संकेत लेख में किया गया है।

रणपत : तब आप सब लोग उसी स्थान पर चलें और सब के सामने उस स्थान की खुदवाई की जाए।

सब लोग : (उठते हुए) ठीक है चलो सारी सभा उसी स्थान पर चलें।

[सब के जाते ही स्टेज पर अंधेरा हो जाता है और सफेद पर्दे पर छाया चित्र से उभरने लगते हैं खुदाई के काम जुटे लोगों की छायाएं स्पष्ट दिखाई देती हैं और पर्दे में से लोगों के जोर जोर से बोलने और हथयार चलाने की आवाजें सुनाई देती है]

[शोर में से उभरती आवाज़ें]

एक आवाज़ : देखो भाइयों यहां पर तालाब के किनारे के पत्थ स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं।

दूसरी आवाज़ : इधर खोदो इधर !

तीसरी आवाज़ : बस इसी पत्थर की सीध में गहरे तक खोदते चलो।

चौथी आवाज़ : (जरा दूर से) भाइयो ! यह निकलने लगे कोयले।

बहुत सी आवाज़ें : इधर भी, इधर भी ! सरपंच जी आप स्वय आ कर देखें एक ही सीध में कोयले निकल रहे हैं।

पांचवी आवाज़ : बस भाइयो बस ! प्रतख्य प्रमाण मिल गये।

[खुशी का शोर सा मच जाता है]

]स्टेज पर धीरे धीरे प्रकाश उभरता है। सब लोग आने लगते है]

रणपत : (बांगी को सम्बोधन करते हुए) बांगी आप को कुछ कहना है ?

बांगी : नहीं !

रणपत : तो सुनें ! इस खानदान के उत्तर की सब भूमी चौधरी की है वे उस पर अधिकार कर सकते हैं यही पंचायत का निर्णय है।

[चौधरी गद् गद् हो कर सरपच के पैरों में गिर पड़ते हैं। रणपत उसे उठाते हुए उस के आंसू पोंछते हैं।

चौधरी सब लोगों के सामने हाथ बां कर कृतज्ञता व्यक्त करते हैं]

चंद्रू : धन्य है पंचायत !

चोहलो : धन्य है पंचायत का न्याय !

चौधरी : दूध का दूध और पानी का पानी !

एक आदम : धन्य है सरपंच रणपत !

[धीरे धीरे चौधरी सरपंच और दूसरे लोग चले जाते हैं केवल बांगी फिड्डू मोहतवर और नौकर भीमा हेड़ी बगैरा सामने रह जाते हैं विक्षोभ और दुख की आग में जलता बांगी गहरी गहरी सांसें लेता मुंह फेर कर खड़ा रहता है। मोहतवर और फिड्डू आपस में संकेत करते हुए बांगी को धीरज बंधने की सकीम लड़ाते हैं।]

फिड्डू : (डरते झिझकते बांगी के निकट पहुंच कर) सरकार ! देर हो चुकी है आप महल की तरफ पधारें।

बांगी : (क्रोध में) मार लाठी ! बदमाशो तुम लोगों ने मिल कर मुझे बरबाद कर डाला है। इस बेजती और कलंक ने हमें कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा। तुम सब मेरे वैरी हो ! मैं एक एक से निपट लूंगा !

मोहतवर : (चापलूसी से) सरकार इस में हमारा क्या दोष ? मैंने तो पहले ही कह दिया था कि आपने इस पुरोहित रणपत को पंच बना कर गलती की है।

बांगी : मार लाठी ! गलती ? वह ब्राह्मण का बच्चा हमारा ही पुरोहित होकर हमारे खलाफ फैसला करे और तुम लोग मेरी गलतियां जताओ। बदसाशों ! मैं एक एक के साथ निवट लूंगा ! तुम सब फांसी पर लटकाने के लायक हो ! (दांत पीस कर) मैं इस बैरी चोहलो, उस रणु सरपंच, उसकी बूढ़ी कर्कशा मां और उस बूढ़े खूसट को अपने हाथों मौत के घाट उतार कर ही घर जाऊंगा !

मोहतवर : सरकार राजनीति हही कहती है कि बुद्धिमान राजा कठिन से कठिन समय से भी, अपने शत्रुओं से बदला लेने की बात न भूले।

बांगी : (विक्षप्त अट्टहास करके) बदला ! बदला !! बदला !!! अब मैं बदला लेकर दम लूंगा। चाहे मेरा सर्वस्व नष्ट हो जाए !

फिड्डू : महाराज ! यही बात तो मेरी घर बाली भी कहती है कि तेज़वंत राजा का प्रताप, जलती आग के समान शत्रुओं को भस्म कर डालता है। मगर आप खुद क्यों करेंगे यह काम ! यह इतने नौकर चाकर किस दिन काम आयेंगे ?

बांगी : (जोश में) ठीक है ! अभी बुलाओ इन हेड़ी, फीने या भीमे को। ओ फीने !

फीना : (सामने आ कर) सरकार !

बांगी : तुम यह तलबार लेकर अभी जाओ और घर पहुंचने से पहले पहले इस रणपत का सिर काट डालो !

फीना : (हैरानी और डर से) मैं मार डालूं रणजीत को ?

बांगी : हां, हां इसी समय भाग कर जाओ ! वह वैरी घर तक न पहुँचने पाये ।

फीना : (भड़क कर पीछे हटते हुए) सरकार ! मैं आप का नौकर जरूर हूँ मगर काम करने के लिये किसी की हत्या करने नहीं (तलवार फैंकते हुए) आप खुद ही करें यह अत्याचार ! या आप को कुमती देने वाले मोहतबर और फिड्डू करें यह कत्ल और खून !! मैं चला !

[तलवार फैंक कर भाग जाना]

बांगी : (गुस्से में तलवार उठा कर फीने का पीछा करते हुए) ठहर साले ! पकड़ो ! पकड़ो ! इस बदमाश को !

[कुछ कदम आगे बढ़ना है]

फिड्डू : (बढ़ते बांगी का रास्ता रोक कर) सरकार ! इस तरह तो आप खुद ही हत्याओं के अपराध मे फस जाएगें । उससे भी हमारे दुशमनों का ही लाभ होगा ! क्यों न उस कांटे से ही कांटा निकाल फेंका जाए ?

मोहतबर : मगर कैसे ?

फिड्डू : तभी तो कहती है मेरे घर वाली, कि फिड्डू जी, अकल तो आप की काफी तेज है मगर कोई कदरदान नहीं मिला !

बांगी : मार लाठो। उल्लू ! घर वाली का ही गुणगान करेगा या कोई बात भी बतायेगा ?

फिड्डू : (साजशी ढंग से) गरीब नवाज़ ! इस रणु पुरोहित के ममेरे भाई त्रिलोकपुरिये ब्राह्मण भूखों मरते फिरते हैं ! क्यों न उन्ही लोगों से काम करवाया जाए ?

बांगी : (चौंककर) वह कैसे ?

फिड्डू : (फुसफुसा कर) श्रीमान ! आप उनको अग्रहार देना मानिये, और अपना पुरोहित बनाने का लालच दीजिये, तब देखिये क्या होता है !

बांगी : इस तुच्छ लोभ के लिये वे क्यों अपने भाई की हत्या करने लगे ?

फिड्डू : ओ महाराज ! मेरे घर वाली तो कहती है कि "भूखा क्या न करत।" नीच और स्वार्थी लोग अपने स्वार्थों की पूर्ती के लिये अधम से अधम पाप भी कर सकते हैं !

बांगी : (क्रुध हो कर) बदमाश नाई ! इस बहाने हम पर ही व्यंग कसता है ?

मोहतवर : नही सरकार ! आप पर कौन व्यंग कर सकता है। आप ठहरे राजा लोग। राजा लोगों की यह बातें तो राजनीति कहलाती हैं।

फिड्डू : उन मूर्ख ब्राह्मणों से जो चाहें करवा सकता हूँ सरकार! मगर यहां कोई ऐसी गम्भीर तजवीजें बनाने बताने का स्थान है ? आप घर चले, विश्राम करें, फिर सारी योजना बताऊंगा माईबाप !

मोहतवर : हां ! फिड्डू ठीक कहता है सरकार ! ऐसी बातें

एकांत में सोची समझी जानी चाहिये।

बांगी : अच्छा ? मार लाठी ! हम तुम्हारी बात मान लेते है मगर काम न बना तो याद रखना, तलवार से टुकड़े टुकड़े करके कुत्तो के आगे फैंक दूंगा !

[सब जाते है]

OOO

सातवाँ दृश्य

[पूर्व दर्शित रणपत का घर। समय दोपहर रणपत की माता बैठी पिटारी खोले कुछ तलाश रही है। बीच बीच में अंदर की ओर से बर्तनों के ठनठनाने और लोगों के बातें करने की आवाजें आ रही हैं]

शुक्रा : (प्रवेश करते ही) मां जी।

मां : (सिर ऊपर उठा कर) पंडित कुछ मांग रहे थे दिया उनको ?

शुक्रा : हां दे आई। परन्तु वे कह रहे कि श्राद्ध करने में देर हुई जाती है।

मां : (परेशानी में) क्या कहूँ बेटी ! मैंने उसे जाते जाते ही मनाह कर दिया था, मगर वह हठी कब किसी की सुनता है ? घर पर बाप का श्राद्ध है दस ग्रामों के लोग भोज पर आ रहे हैं और उस भले मानुस का कहीं पता नहीं। (दुखी सी) जाने क्यों मेरी दाहनी

आंख बार बार क्यों फरफरा रही है !

[पर्दे में से एक आवाज़]

एक आवाज : मां जी केसर जल्दी दीजिये पंडित जी तिलक त्यार कर रहें हैं !

मां : (फिर पिटारी में ढूंडते हुए) पता नहीं कहां रख दिया है। (शुक्रा से) ले तूं ही ढूंड दे बहु ! मेरी मति हर ली है इस लड़के ने।

[इस समय लहु से लथपथ बस्त्र फटे चंदू का प्रवेश]

चंदू : (प्रवेश करते ही घबराहट में) पुरोहित जी ! पुरोहित जी !

मां : (हैरानी होर घबराहट में) कौन चंदू ? क्यों वे क्या हुआ है तुझे ? कहां से आ रहे हो ?

चंदू : पुरोहित जी कहां हैं ? कहां है पुरोहित जी ?

मां : (घबराहट में) क्यों भैया ? बात तो बता हुआ क्या है तुझे ? इतना घबराया हुआ क्यों है ?

चंदू : (हांफते हुए) मां जी अनर्थ होने वाला है ! हम पांच सात जन पचायत के फैसले के अनुसार चौधरी की जमीन पर हल चलाने गये थे। बांगी के हथयार बंद लोगों ने हमें आ दबोचा। चौधरी को बांध लिया। कुछ घायल वहीं पड़े हैं। मैं जैसे कैसे भाग निकला। चौधरी को बचाईये। उन आदमियों की रक्षा कीजिये हमारे बैलों को छुड़वा दीजिये !

मां : हे भगवान ! उन राक्षसों को कौन रोके ! रणुआ तो सुबह से ही कहीं निकल गया था। दोपहर बीत चली अभी तक नहीं लौटा। कब श्राद्ध करेगा ? कब ब्राह्मण भोज होगा ? बहुत ही दुखी किया है इस लड़के ने ! तुझे मिले तो जल्दी बुला दे नहीं तो सांझ कर देगा श्राद्ध करने में।

चंदू : ओह ! मै चला ! गांव वालो से ही.......

[निकल जाता है]

OCO

आठवां दृश्य

[झाड़ियों और घास से अटा जंगल। मोहतवर और बांगी छिपे छिपे दबे पांव आगे बढ़ रहे हैं]

बांगी : (दबी गुस्सैली आवाज़ में) आखर यह बदमाश फिड्डू मर कहां गया ?

मोहतवर : (मुंह पर अंगुली रख कर) धीरे बोलिये सरकार ! काम भी आसान नहीं है ! (उचक कर दूर देखते हुए) वो .. वह देखिये दरखतों के पीछ खड़ा है।

[दबी आवाज़ और हाथ के इशारे से बुलाते हुए इधर आ ! इधर आ ! (बांगी से) इस नाई का मनसूबा भी बहुत पक्का होता है सरकार ! क्या मजाल चूक जाए !]

फिड्डू : (डर से थर थर कांपते और हांफते हुए प्रवेश करके) स...स स . सरकार ! आप यहां सामने क्यों खड़े

है छिप जाईये। इधर झाड़ियों में। जाल बिछ चुका है! शिकार फंसने ही वाला है।

बांगी : मार लाठी! ससुर इतना कांप क्यों रहा है? जरा हिम्मत से काम ले! उन ब्राह्मणों को कहां बैठाया है? उनके पास कोई हथयार भी है या नहीं?

फिड्डू : (कांपते हुए) स... स . स...सरकार! एक के पास कटार अ...अ . और दूसरे के पास कुल्हाड़ी है। रणु जब बीमार को देखने के लिये झुकेगा त त तो नीचे से कटार और ऊपर से कुल्हाड़ा एक साथ काम करेंगे।

मोहतवर : (दूर देख भयभीत स्वर में) वह धूल उड़ती आ रही है सरकार!

फिड्डू : (उसी तरफ देखते हुए) उ_ उ . उ उतर पड़ा घोड़े से! वह ब...ब...ब बढ़ चला चौंतड़े की तरफ!

बांगी : (उचक कर देखते हुए) चुप! चुप!

फिड्डू : (भय से चीख कर) ओह! ओह! वह मार दिया कुलहाड़ा!

मोहतवर : बेड़ा गर्क कर डाला उन कायरों ने! बच गया! घोड़े की तरफ भाग रहा है!

बांगी : मार लाठी! बिगाड़ डाला सारा काम उन कायरों ने!

फिड्डू : (फिर उचक कर गौर से देखते हुए) मगर वार खाली नहीं गया सरकार ! बायीं तरफ का कपड़ा खून से भीग गया है। ओ.. हो.. वह लुढ़क गया ! ओ... फिर उठ पड़ा ! इ इ इ इधर. . . इधर ही आ रहा है ! (कांपने लगता है)

बांगो : मार लाठी ! उधर मरो डरपोको ! मैं इधर का रास्ता रोकता हूं !

[तलवार खींच कर बांगो एक तरफ और मोहतवर तथा फिड्डू दूसरी तरफ निकल जाते हैं, थोड़ी देर में खून से लथपथ जख्मी रणपत का गिरते पड़ते प्रवेश]

रणपत : (पेट के घाव को थामे कराहते हुए) हे ईश्वर ! धोखा ! विश्वासघात ! ओह बैरी भाईयो। यह तुम ने किस जन्म का बदला लिया ? क्या बिगाड़ा था मैंने तुम्हारा ? हे भगवान ! यह मेरे कौन से पापों का फल है ! (जमीन पर गिर कर) ओह ! पानी ! हे मां ! तुम्हारा बेटा इस दियाबान जंगल में बे कसूर मारा गया ! सुक्खा ! ...

बांगो : (तलवार थामे भयानक अट्टहास करते हुए) ह ह... ह.. ह ! मुझ से टकराने वाले न्यायकारी ! ले अपने न्याय का इनाम !

रणपत : (जमीन पर पड़े पड़े कराहते हुए) आह ! जालम ! अत्याचारी तूं ! तू तलबार के बलपर न्याय और सत्य को मिटाना चाहता है ? पापी ! उस ईश्वर के दरबार में क्या जवाब देगा ? हाय राक्षस ! तेरा कैसे भला होगा ?

बांगी : (शीघ्रता से आगे बढ़कर रणरत के पेट में तलवार घोपते हुए) मेरा जो कुछ भी हो, मगर तू अपनी सरपंची का उपहार लेता जा।

[रणरत का कराह कर ठंडे हो जाना। बांगी का भाग कर चले जाना और इसी समय चौधरी का प्रवेश करके रणरत को तड़पते देख कर क्रदन सा करते हुए]

चौधरी : ओ बांगी तेरा सर्वनाश! हत्या! ब्रह्म हत्या! ओ दुष्ट कुलनाशी तेरा क्योंकर भला होगा! इस ब्रह्म हत्या का महापाप जन्मजमान्तर तक तेरा पीछा नहीं छोड़ेगा!

[रणपत्र की लाश को दोनों हाथों पर उठाये धीरे धीरे एक तरफ को निकल जाता है]

OO

नवम दृश्य

दाता 'रणपत' की समाधि पर मेला घुटा है। समाधि भवन दीप मालाओं से जगमगा रहा है। चारों फूल और फूलमालाएं सुशोभित है आने जाने वाले श्रद्धालू भक्त किसानों का तांता लग रहा है। इसी समय पूर्वदर्शित सन्यासी चारण रणपत यशो गाथा गाते हुए प्रवेश करता है। कुछ देर खड़ा रह कर गाता है और अंतिम छन्द के समय सिर झुका प्रणाम करते हुए धीरे धीरे निकल जाता है। उसके हाथ में इकतारा है।

चारण

आदि काल ही से प्रकाश संग लड़ता रहा अंधेरा।
सदा तिमर का हृदय चीर कर फटा नया सवेरा ।।
जुल्म - सितम पल भर को चाहे फूले नहीं समाते।
प्रलयंकर घनगर्जन करते आंधी सम छा जाते ।।
आखिरकार सदा ही से है विजय सत्य की होती।
मूढ़ क्रूरता अपना ही दिलघाव बनी सी रोती ।।

धन्य न्याय औ धन्य पंचायत धन्य हैं रणपत दाता ।
धन्य उस बीरपुर की भूमी धन्य आलमा माता ।।
युगों युगों तक ज्वलित रहे गी अमर ज्योति नूरानी ।
सत्य न्याय का पंथ सुझाती रणपत की कुर्बानी ।।

OO

ललितकला, संस्कृति ते साहित्य अकादमी

जम्मू व कश्मीर, जम्मू ।